- 19th Year
- Issue: 259
- 26.01.2026 (MONDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

दैनिक

# कलिंग समाचार

The kalingasamachar

e-paper-www.thekalingasamachar.com

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

# भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा-राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

नई दिल्ली २५/०१ (संवाददाता): राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 77वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए वैश्विक उथल-पुथल के दौर में देश की अर्थव्यवस्था की विकास की रज़्तार जारी रहने का भरोसा जताया है। राष्ट्रपति ने कहा कि विश्व-पटल पर अनिश्चितता के बावजूद भारत में निरंतर आर्थिक विकास हो रहा है।

भारत निकट भविष्य में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। वर्तमान वैश्विक स्थिति के संदर्भ में राष्ट्रपति ने आत्म निर्भरता और स्वदेशी के मूलमंत्र पर जोर देते हुए कहा कि हम विश्व-स्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में निवेश करके अपनी आर्थिक संरचना का उच्च-स्तर पर पुनर्निर्माण कर रहे हैं। देश की आर्थिक दिशा में परिवर्तन के लिए सरकार द्वारा उठाए कदमों की चर्चा करते हुए राष्ट्रपति ने जीएसटी टैज़्स व्यवस्था में हुए ताजा सुधार का उल्लेख किया और कहा कि इस निर्णय से अर्थव्यवस्था को और अधिक शक्ति मिलेगी।

जीएसटी स्वतंत्रता के बाद देश के आर्थिक एकीकरण का दिशा में सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है। श्रम सुधार के क्षेत्र में चार %लेबर कोड% से श्रमिक और उद्यमी दोनों को लाभ मिलेगा तथा विकास को भी गति मिलेगी। अनेक अनावश्यक नियमों को निरस्त कई कंप्लायंस को को समाप्त किया गया है तथा जनहित में व्यवस्थाओं को सरल बनाया गया है। टेज़्नॉलॉजी के माध्यम से लाभार्थियों को सुविधाओं के साथ सीधे जोड़ा जा रहा है। रोजमर्रा के जीवन को बेहतर बनाने के लक्ष्य के साथ इज ऑफ लिविंग को प्राथमिकता दी जा रही है।

राष्ट्रपति ने कहा कि सरकार और जन-सामान्य के बीच की दूरी को निरंतर कम किया जा रहा है। पिछले दशक के दौरान राष्ट्रीय लक्ष्यों को जनभागीदारी के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों को जन-आंदोलन का रूप दिया गया है। डिजिटल पेमेंट व्यवस्था को बहुत बड़े पैमाने पर अपनाया जाना इसका नमूना है और आज विश्व के आधे से अधिक डिजिटल लेनदेन भारत में होते हैं।

अपने संबोधन में उन्होंने देश के विकास तथा सुरक्षा में अहम भूमिका निभाने वाले किसानों, युवाओं तथा जवानों की भूमिकाओं की प्रशंसा भी की। कहा देश में स्टार्ट-अप्स की प्रभावशाली सफलता का प्रमुख श्रेय युवा उद्यमियों को जाता है और उन्हें विश्वास है कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में युवा-शक्ति की प्रमुख भूमिका रहेगी।

राष्ट्रपति ने अपने संबोधन के दौरान महात्मा गांधी, सरदार पटेल, नेती सुभाषचंद्र बोस,

बाबा साहब आंबेडकर, रवींद्र नाथ टैगोर, बकिंमचद्र चट्टोपाध्याय, सुब्रणयम भारती, महर्षि अरविद, नारायण गुरू, बिरसा मुंडा जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों तथा विभूतियों का अलग-अलग संदर्भ में उल्लेख किया मगर देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का कोई जिक्र नहीं किया।

हाल के दौर में संविधान खतरे में होने के दावों के परिप्रेक्ष्य में इसका उल्लेख किए बिना राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा भारत का संविधान अब आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भारतीय भाषाओं में उपलज़्ध है। संविधान को भारतीय भाषाओं में पढ़ने और समझने से देशवासियों में संवैधानिक राष्ट्रीयता का प्रसार होगा तथा आत्म-गौरव की भावना मजबूत होगी।

राष्ट्रपति ने कहा कि 26 जनवरी 1950 के दिन से ही हम अपने गणतंत्र को संवैधानिक आदर्शों की दिशा में आगे बढ़ा रहे हैं। हमारा संविधान विश्व इतिहास में आज तक के सबसे बड़े गणराज्य का आधार-ग्रंथ है। संविधान में निहित न्याय, स्वतन्त्रता, समता और बंधुता के आदर्श हमारे गणतंत्र को परिभाषित करते हैं। संविधान निर्माताओं ने राष्ट्रीयता की भावना तथा देश की एकता को संवैधानिक प्रावधानों का सुदृढ़ आधार प्रदान किया है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस की चर्चा करते हुए कहा कि हमारे मतदाता, बाबा साहब आंबेडकर की सोच के अनुरूप अपनी राजनैतिक जागरूकता का परिचय दे रहे हैं।

मतदान में महिलाओं की बढ़ती हुई भागीदारी हमारे गणतंत्र का एक शक्तिशाली आयाम है। राष्ट्रपति ने ऑपरेशन सिंदूर के द्वारा आतंकवाद के ठिकानों पर सटीक प्रहार का जिक्र करते हुए कहा कि सुरक्षा के क्षेत्र में हमारी आत्मनिर्भरता से ऑपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता को शक्ति मिली।

पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में उन्होंने कहा कि इस जुड़े क्षेत्रों में भारत ने विश्व समुदाय का मार्गदर्शन किया है। प्रकृति के साथ समन्वित जीवन-शैली भारत की सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा रही है।

दुनिया में जारी टकराव की ओर इशारा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि पूरे विश्व में शांतिपूर्ण व्यवस्था स्थापित होने से ही मानवता का भविष्य सुरक्षित रह सकता है और अनेक क्षेत्रों में व्याप्त अशांति के वातावरण में भारत द्वारा विश्व-शांति की पैरोकारी कर रहा है। राष्ट्रपति ने इस क्रम में यह भी कहा कि देश के मानस पटल से गुलामी की मानसिकता के अवशेषों से मुक्त होने का समयबद्ध संकल्प किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, गणित, साहित्य तथा कला की महान विरासत उपलज़्ध है।

## भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है-पीएम मोदी

नई दिल्ली २५/०१ (संवाददाता):गणतंत्र दिवस से एक दिन पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मन की बात कार्यक्रम सिर्फ रेडियो संबोधन भर नहीं रहा, बल्कि लोकतंत्र, युवाओं की भूमिका और भारत की आर्थिक यात्रा को एक साथ जोड़ने का स्पष्ट प्रयास दिखा।

130वें एपिसोड का संयोग राष्ट्रीय मतदाता दिवस से जुड़ना इसे और भी प्रतीकात्मक बना दिया। पीएम ने मतदाता बनने को सिर्फ एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि भारत के भविष्य में सक्रिय भागीदारी का उत्सव बताया।

इसके लिए उन्होंने अलग से एक पत्र भी लिखकर

लोगों से आग्रह किया कि किसी युवा के 18 वर्ष की उम्र पूरी कर पहली बार मतदाता बनने पर उसे उत्सव की तरह मनाया जाए। मोहल्ला, गांव-शहर उसका अभिनंदन करे। मिठाइयां बांटी जाएं। पीएम का यह सुझाव अपने आप में लोकतंत्र को सामाजिक संस्कृति से जोड़ने का संकेत है।

प्रधानमंत्री का यह कहना कि वोटर होना संवैधानिक विशेषाधिकार के साथ-साथ कर्तव्य भी है, लोकतांत्रिक जिज़्मेदारी की याद दिलाता है। बीते वर्षों में मतदान प्रतिशत बढ़ा है, लेकिन शहरी क्षेत्रों और युवाओं में अब भी उदासीनता एक चुनौती बनी हुई है।

मोदी का जोर इस बात पर था कि मतदान केवल वोट डालने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस अधिकार का प्रयोग है जिसके माध्यम से नागरिक देश की दिशा तय करने में अपनी आवाज शामिल करता है।मन की बात का दूसरा अहम पक्ष देश की आर्थिक और औद्योगिक दिशा से जुड़ा था। प्रधानमंत्री मोदी ने स्टार्टअप संस्कृति की सराहना करते हुए बताया कि भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है।

वर्ष 2016 में शुरू हुई इस यात्रा में युवाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि आज भारतीय स्टार्टअप ऐसे क्षेत्रों में काम कर रहे हैं जिनकी कल्पना एक दशक पहले मुश्किल थी। कृत्रिम बुद्धिमज़ा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, सेमीकंडज़्टर, ग्रीन हाइड्रोजन और जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र इसके उदाहरण हैं।

पीएम मोदी का यह उल्लेख सिर्फ उपलज़्धि गिनाने तक सीमित नहीं था, बल्कि भविष्य की अपेक्षाओं का संकेत भी था।

## भारत पर करुणा और अहिंसा के सिद्धांतों को संरक्षित व साझा करने की विशेष जिमेदारी है-रिजिजू

नई दिल्ली २५/०१ (संवाददाता): केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने शनिवार को कहा कि जैसे-जैसे वैश्विक स्तर पर लोग बौद्ध धर्म की ओर रुख कर रहे हैं, भारत पर करुणा, अहिंसा, सद्भाव और सहअस्तित्व के सिद्धांतों को संरक्षित और साझा करने और उन पर अमल करने की विशेष

जिज़्मेदारी है।यहां 'भारत मंडपम' में आयोजित वैश्विक बौद्ध शिखर सज़्मेलन के दूसरे संस्करण को संबोधित करते हुए संसदीय कार्य और अल्पसंज़्यक मामलों के केंद्रीय मंत्री रीजीजू ने बौद्ध धर्म की समावेशी और सार्वभौमिक अपील को रेखांकित किया।

उन्होंने कहा कि इसका लोकाचार न केवल उन लोगों के लिए मायने रखता है जो खुद को बौद्ध मानते हैं, बल्कि सभी के लिए मायने रखता है। विभिन्न देशों के कई प्रज़्यात भिक्षुओं, विद्वानों और बौद्ध संगठनों के सदस्यों की सभा को संबोधित करते हुए, केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने बौद्ध संवाद को बढ़ावा देने में भारत के ''वैश्विक नेतृत्व'' पर प्रकाश डाला।

## एआई के क्षेत्र में अग्रदूत बनने का लक्ष्य-मोहन माझी

भुवनेश्वर २५/०१ (संवाददाता): ओडिशा के मुज़्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कृत्रिम बुद्धिमज़ा (एआई) को शासन एवं सार्वजनिक सेवा वितरण में नए मानदंड स्थापित करने का अवसर प्रदान करने वाली प्रौद्योगिक बताते हुए कहा है कि ओडिशा को एक ऐसा मॉडल अपनाना चाहिए जिसमें राज्य सिर्फ प्रौद्योगिकी को अपनाने वाला न रहे, बल्कि उसका अग्रदूत बने। माझी ने यह बात शनिवार को एक निजी एआई कंपनी के साथ बैठक में

कही जिसमें राज्य में सुरक्षित, समावेशी और संप्रभु कृत्रिम मेधा परिवेश बनाने के प्रयासों पर चर्चा हुई।मुज़्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) की ओर से जारी बयान के अनुसार, चर्चा में कृत्रिम बुद्धिमज़ा को एक दीर्घकालिक सार्वजनिक क्षमता के रूप में स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया और संप्रभु बुनियादी ढांचे एवं राज्य के भीतर टिकाऊ संस्थागत क्षमता पर जोर दिया गया।

बैठक में माझी के अलावा इलेज़्ट्रॉनिज़्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री मुकेश महालिंग, मुज़्य सचिव अनु गर्ग और वरिष्ठ सरकारी अधिकारी उपस्थित रहे। चर्चा के दौरान ओडिशा सरकार ने साझा, संप्रभु कृत्रिम मेधा बुनियादी ढांचा विकसित करने का अपना दृष्टिकोण रखा।

### शुभकामनाएं

गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर हमारे सुधी पाठको, विज्ञापनदाताओं, हॉकर बंधुओं एवं शुभचिंतकों केा हार्दिक शुभकामनाएं।

**संपादक**

### अवकाश

गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर आज 26.01.2026 को कलिंग समाचार कार्यालय में अवकाश रहेगा। अतः हमारा अगला अंक 28.01.2026 को प्रकाशित होगा।

**व्यवस्थापक**

# विविध समाचार

## रायपुर साहित्य उत्सव के समापन समारोह में शामिल हुए राज्यपाल

रायपुर २५/०१ (संवाददाता): राज्यपाल रमेन डेका ने कहा है कि इंटरनेट से भरी इस दुनिया और न्यू जनरेशन वाले इस दौर में भी प्रिंट और साहित्य का महत्व हमेशा बना रहेगा। राज्यपाल श्री डेका ने आज नवा रायपुर के पुरखौती मुक्तांगन परिसर में तीन दिवसीय रायपुर साहित्य उत्सव 'आदि से अनादि' के समापन समारोह के अवसर पर उक्त विचार व्यक्त किए। राज्यपाल ने कहा कि साहित्य और कविता में हमेशा एक संदेश होना चाहिए। जिस तरह संगीत के सात स्वर हमें जोड़े रखते है उसी तरह साहित्य का आदान-प्रदान नई बातों का सीखने का अवसर प्रदान करता है।

समापन समारोह में मुज्य अतिथि की आसंदी से राज्यपाल ने कहा कि पिछले तीन दिनों में इस मंच पर बहुत अच्छी और सार्थक चर्चाएं हुईं। विचारों का खुलकर आदान-प्रदान हुआ। सबने मिलकर साहित्य, समाज और जीवन से जुड़े कई विषयों पर बात की। यह उत्सव सभी साहित्य प्रेमियों के लिए एक यादगार और सीखने वाला अनुभव रहा है। इस दौरान कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का विमोचन भी हुआ। देश भर से आए नामी प्रकाशकों ने यहां किताबों का बहुत सुंदर संग्रह प्रस्तुत किया। पाठकों को नई-नई किताबें देखने और पढ़ने का अच्छा मौका मिला। यह देखकर अच्छा लगता है कि आज भी लोगों में किताबों के प्रति गहरी रुचि है। श्री डेका ने कहा साहित्य और संगीत का आदान प्रदान जरूरी है और ऐसे साहित्य का उत्सव हमेशा होना चाहिए। उन्होंने तीन दिवसीय सफल आयोजन के लिए सभी को बधाई देते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन राज्य के अन्य शहरों एवं गांवों के स्तर तक भी किया जाना चाहिए और यह आयोजन सरकारी न होकर समुदाय की भागीदारी वाले होने चाहिए। श्री डेका ने कहा कि आज की पीढ़ी छज़ीसगढ़ के रामायण कालीन संस्कृति एवं साहित्य को भूल गयी है। हमारा राज्य बहुत सुंदर है और यहां की संस्कृति भी बहुत समृद्ध है। इसका प्रचार प्रसार होना चाहिए ताकि राज्य के बाहर के लोग यहां के बारे में जान सकें। श्री डेका ने कहा कि शज़्दों में बहुत शक्ति होती है। शज़्द का रूप ब्रह्म है। उन्होंने बंकिमचंद्र चटर्जी के वंदे मातरम गीत का उल्लेख किया और कहा कि सारे देश को इन दो शज़्दों ने जागृत कर दिया था। उन्होंने कहा कि साहित्य हमें जोड़ता है, हमें सोचने की नई दिशा देता है और हमें बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देता है। हम सभी साहित्य को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं, संवाद की परंपरा को आगे बढ़ाएं और विचारों की यह रोशनी लगातार जलाए रखें। उन्होंने उपस्थित लोगों से आग्रह किया कि वे अपने जीवन में कम से कम एक ऐसा कार्य अवश्य करें, जो बिना किसी लेन-देन या व्यक्तिगत स्वार्थ के हो। ऐसे कार्य देश और समाज के समग्र विकास को मजबूती प्रदान करते हैं।

समापन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित विज़ मंत्री ओ. पी. चौधरी ने कहा कि छज़ीसगढ़ में साहित्य की अविरल धारा बहती रही है। कालीदास, रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे कवि एवं साहित्यकारों का इतिहास भी छज़ीसगढ़ से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भी इस तरह के आयोजन अनवरत किए जाते रहेंगे। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रज़्यात रंगकर्मी, नाट्य लेखक डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने की। इस अवसर पर फिल्म अभिनेता एवं निर्देशक डॉ. चंद्र प्रकाश द्विवेदी, फिल्म निर्माता-निर्देशक अनुराग बसु विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर मुज़्यमंत्री के मीडिया सलाहकार पंकज झा और आर कृष्णा दास, राज्यपाल के सचिव डॉ. सी. आर. प्रसन्ना, राज्यपाल के विधिक सलाहकार भीष्म प्रसाद पाण्डेय, छज़ीसगढ़ साहित्य अकादमी के अध्यक्ष शशांक शर्मा सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

## छज़ीसगढ़ के लिए गौरव का क्षण, 'बड़ी दीदी' बुधरी ताटी, डॉ. रामचंद्र गोडबोले और सुनीता गोडबोले पद्मश्री के लिए चयनित

रायपुर २५/०१ (संवाददाता): छज़ीसगढ़ के लिए यह क्षण अत्यंत गर्व और सज़्मान से भरा है। मुज़्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा है कि बस्तर अंचल की समाजसेविका, स्नेह और ममता की प्रतिमूर्ति 'बड़ी दीदी' के नाम से विज़्यात बुधरी ताटी जी, तथा जनजातीय क्षेत्रों में नि:स्वार्थ सेवा के जीवंत प्रतीक डॉ. रामचंद्र गोडबोले जी एवं सुनीता गोडबोले जी का पद्मश्री सज़्मान के लिए चयनित होना पूरे प्रदेश के लिए अपार गौरव का विषय है। इन तीनों विभूतियों ने अपने सेवा कार्यों से न केवल छज़ीसगढ़, बल्कि देश का भी नाम रोशन किया है। मुज़्यमंत्री ने कहा कि मंत्री लखनलाल देवांगन ने कवर्धा में किया ध्वजारोहण बड़ी दीदी' बुधरी ताटी जी ने बस्तर क्षेत्र में वर्षों से समाज सेवा, मानवता, स्नेह और ममता का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी जनजातीय समाज के उत्थान, बच्चों और जरूरतमंदों की सेवा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। बस्तर में उन्हें 'बड़ी दीदी' के नाम से सज़्मान और स्नेह के साथ पुकारा जाना उनके कार्यों की व्यापक स्वीकार्यता को दर्शाता है। इसी प्रकार डॉ. रामचंद्र गोडबोले जी और सुनीता गोडबोले जी ने जनजातीय अंचलों में स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में नि:स्वार्थ भाव से सेवा कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। दुर्गम और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में रहकर उन्होंने आदिवासी समाज के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके कार्यों से हजारों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। मुज़्यमंत्री श्री साय ने कहा कि इन तीनों विभूतियों का पद्मश्री के लिए चयन यह सिद्ध करता है कि सच्ची सेवा, समर्पण और मानवता की भावना को देश सर्वोच्च सज़्मान प्रदान करता है। उन्होंने प्रदेशवासियों की ओर से सभी चयनित विभूतियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य और सतत सेवा कार्यों की कामना की।

## सीएम साय ने कांसाबेल में किया स्मार्ट ज़्लास रूम का शुभारंभ

रायपुर २५/०१ (संवाददाता): जशपुर जिले के स्कूली बच्चे अब स्मार्ट ज़्लास रूम के जरिए पढ़ाई करेंगे। मुज़्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज कांसाबेल के सरस्वती शिशु मंदिर में स्मार्ट ज़्लास रूम का शुभारंभ किया। इस परियोजना के लिए एसईसीएल द्वारा सीएसआर मद से 5 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है, जिसके अंतर्गत जिले के शासकीय विद्यालयों में 206 इंटरएज़्टिव पैनल लगाए जाएंगे। मुज़्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आधुनिक तकनीक के माध्यम से शिक्षा को रोचक एवं प्रभावी बनाना समय की आवश्यकता है, ताकि ग्रामीण एवं दूरस्थ अंचलों के बच्चों को भी शहरों के समान बेहतर शैक्षणिक संसाधन उपलज़्ध कराए जा सकें।

उन्होंने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे विद्यार्थियों में नवाचार, जिज्ञासा एवं तकनीकी दक्षता का विकास होगा, जो उनके उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव बनेगा। इस अवसर पर कार्यक्रम में विधायक गोमती साय सहित अनेक जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

अधिकारियों ने बताया कि एमओयू के तहत जशपुर जिले के चयनित शासकीय विद्यालयों में चरणबद्ध रूप से इंटरएज़्टिव पैनल स्थापित किए जाएंगे। इन उपकरणों के माध्यम से शिक्षक डिजिटल कंटेंट, वीडियो, प्रेजेंटेशन एवं ई-लर्निंग संसाधनों का उपयोग कर कक्षाओं को अधिक रोचक, सरल एवं प्रभावी बना सकेंगे। इस पहल से जिले के सैकड़ों विद्यार्थियों को गुणवज़ापूर्ण डिजिटल शिक्षा की बेहतर सुविधा प्राप्त होगी। उल्लेखनीय है कि मुज़्यमंत्री की पहल पर जशपुर जिले के शासकीय विद्यालयों में गुणवज़ापूर्ण एवं आधुनिक शिक्षण सुविधाएं उपलज़्ध कराने की दृष्टिकोण से विगत माह जिला प्रशासन एसईसीएल एवं ईडूसीआईएल के मध्य त्रिपक्षीय एमओयू पर हस्ताक्षर हुए थे।

## प्रधानमंत्री ने भारतीय कंपनियों और उद्यमियों से जीरो डिफेज़्ट उत्पाद बनाने का संकल्प लेने को कहा

नयी दिल्ली २५/०१ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 2026 के पहले %मन की बात% कार्यक्रम को संबोधित किया। अपने 130वें संबोधन में उन्होंने देश की इंडस्ट्री और स्टार्टअप्स से आग्रह किया कि वे अपनी मैन्युफैक्करिंग में एज़्सीलेंस को एक नया बेंचमार्क बनाएं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय उत्पादों की पहचान दुनिया भर में उनकी बेहतरीन गुणवज़ा से होनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने भारतीय कंपनियों और उद्यमियों से %जीरो डिफेज़्ट% उत्पाद बनाने का संकल्प लेने को कहा। उन्होंने कहा, %चाहे हमारा कपड़ा हो, टेज़्नोलॉजी हो, इलेज़्ट्रॉनिज़्स हो या फिर पैकेजिंग, हर क्षेत्र में भारतीय उत्पाद %टॉप क्वालिटी% का पर्याय बनना चाहिए। आइए, हम सब मिलकर जो कुछ भी बनाते हैं, उसकी गुणवज़ा में सुधार करने का संकल्प लें।पीएम मोदी ने उन युवाओं के प्रयासों की जमकर तारीफ की, जिन्होंने 2016 में शुरू हुई भारत की स्टार्टअप यात्रा को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। उन्होंने गर्व से कहा कि आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ये स्टार्टअप उन क्षेत्रों में भी शानदार काम कर रहे हैं, जिनकी 10 साल पहले कल्पना करना भी मुश्किल था।संबोधन के दौरान पीएम मोदी ने बताया कि भारतीय स्टार्टअप अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्पेस, परमाणु ऊर्जा, सेमीकंडज़्टर, ग्रीन हाइड्रोजन और बायोटेज़्नोलॉजी जैसे आधुनिक क्षेत्रों में अपनी धाक जमा रहे हैं। उन्होंने कहा, %आज आप किसी भी सेज़्टर का नाम लें, आपको वहां कोई न कोई भारतीय स्टार्टअप काम करता हुआ मिल जाएगा। मैं उन सभी युवा साथियों को सलाम करता हूं जो खुद का स्टार्टअप चला रहे हैं या इस दिशा में कदम बढ़ाना चाहते हैं।अपने संबोधन के अंत में प्रधानमंत्री ने देशवासियों को राष्ट्रीय मतदाता दिवस और गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई भी दी। उन्होंने नागरिकों से लोकतंत्र के इन उत्सवों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की।

## धर्मेंद्र को पद्म विभूषण, तो शिबू सोरेन को पद्म भूषण...

नई दिल्ली २५/०१ (संवाददाता): प्रसिद्ध अभिनेता धर्मेंद्र को मरणोपरांत देश के दूसरे सबसे सर्वोच्च पुरस्कार पद विभूषण सज़्मानित किया गया है। इसके साथ ही माकपा के वरिष्ठ नेता और केरल के पूर्व मुज़्यमंत्री वीएस अचुतानंदन को भी मरणोपरांत पद्म विभूषण से सज़्मानित किया गया है। दोनों का हाल ही में निधन हुआ था। वहीं उज़राखंड के पूर्व मुज़्यमंत्री, महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल व भाजपा के वरिष्ठ नेता भगत सिंह कोशियारी और झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक व झारखंड के पूर्व मुज़्यमंत्री शिबू सोरेन को पद्म भूषण दिया गया है।

पद्म पुरस्कार पाने वालों की सूची से साफ है कि इसे सभी राजनीतिक और वैचारिक मतभेदों से दूर रखा गया है। वैसे पद्म विभूषण पुरस्कार सज़्मानित पांच व्यक्तियों में तीन केरल के हैं, जहां दो महीने बाद विधानसभा के चुनाव होने वाला है। विभिन्न क्षेत्रों में योगदान के लिए इस साल कुल 131 व्यक्तियों को पद्म पुरस्कारों से सज़्मानित किया है। जिनमें पांच को पद्म विभूषण, 13 को पद्म भूषण और 113 को पद्म श्री से सज़्मानित किया गया है। पद्म विभूषण पाने वालों में धर्मेंद्र और अचुतानंदन के अलावा केरल से आने वाले सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश केटी थामस, केरल के ही पी नारायणन का नाम भी शामिल है।

केटी थामस को सामाजिक और पी नारायणन को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए यह सज़्मान मिला है। 40 से अधिक किताबें लिखने वाले पी नारायणन मलयायम के प्रसिद्ध पत्रकार भी है। इसके साथ ही कला के क्षेत्र में योगदान के लिए उज़रप्रदेश की वायलिन वादक एन राजम को भी पद्म विभूषण से सज़्मानित किया गया है।

पद्म भूषण पाने वालों में शिबू सोरेन, वीके मलहोत्रा और भगत सिंह कोशियारी के अलावा मलयालम फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता ममूटी, प्रसिद्ध गायिका अलका याज्ञनिक, विज्ञापन गुरू पीयूष पांडेय, उद्योगपति उदय कोटक का नाम शामिल है।बजाज से लेकर कई प्रसिद्ध ब्रांड को लोकप्रिय बनाने वाले पीयूष पांडेय का हाल में ही निधन हुआ था। केरल से ही आने वाले श्री नारायन गुरू धर्म परिपालन योगम के महासचिव व वरिष्ठ इड़वा नेता वेल्लाल्ली नटेसन को भी पद्म भूषण दिया गया है। अमेरिका में रहने वाले टेनिस खिलाड़ी विजय अमृतराज का नाम भी इसमें शामिल है।

## 77वां गणतंत्र दिवस, यूरोपीय संघ को न्योता, जानें भारत की इस कूटनीति के गहरे मायने

नयी दिल्ली २५/०१ (संवाददाता): भारत 26 जनवरी को अपना 77वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। बता दें कि यही वह दिन है, जब भारत ने अपना संविधान लागू किया और औपचारिक रूप से एक संप्रभु गणराज्य बना। इस अवसर पर राजधानी दिल्ली के कर्तव्य पथ पर भव्य परेड का आयोजन होगा, जहां सेना की टुकड़ियां कदमताल करेंगी, टैंक और हथियार प्रणालियां गुजरेंगी और आसमान में वायुसेना के लड़ाकू विमान करतब दिखाएंगे।

गौरतलब है कि परेड जितनी अपनी भव्यता के लिए जानी जाती है, उतनी ही चर्चा उस खास मेहमान की भी होती है, जो राष्ट्रपति के ठीक बगल में बैठता है। इस साल भारत ने यूरोपीय संघ को विशेष महत्व देते हुए यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंतोनियो कोस्टा को मुज़्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया हैं। यह कदम भारत-यूरोपीय संघ संबंधों में बढ़ती नजदीकी का संकेत माना जा रहा है।

मौजूद जानकारी के अनुसार, गणतंत्र दिवस परेड की परंपरा 1950 से चली आ रही है, जब पहले मुज़्य अतिथि के तौर पर इंडोनेशिया के तत्कालीन राष्ट्रपति सुकर्णो शामिल हुए थे। शुरुआती वर्षों में भारत ने नवस्वतंत्र देशों के साथ अपने संबंधों को प्राथमिकता दी, जो उस समय के अतिथियों की सूची में साफ झलकता है। समय के साथ अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और पड़ोसी देशों के शीर्ष नेता भी इस आयोजन का हिस्सा बनते रहे हैं।कूटनीतिक जानकारों का मानना है कि मुज़्य अतिथि का चयन केवल शिष्टाचार नहीं होता, बल्कि यह भारत की विदेश नीति की प्राथमिकताओं को भी दर्शाता है। पूर्व राजनयिकों के मुताबिक, विदेश मंत्रालय संभावित नामों की सूची तैयार करता है, जिसके बाद प्रधानमंत्री कार्यालय अंतिम फैसला लेता है।

## लालू प्रसाद यादव ने तेजस्वी यादव को पार्टी का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया

२५/०१ (संवाददाता): बिहार की राजनीति और राष्ट्रीय जनता दल के लिए एक बड़े बदलाव का संकेत देते हुए, लालू प्रसाद यादव ने अपने बेटे और पूर्व उपमुज़्यमंत्री तेजस्वी यादव को पार्टी का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया है। पार्टी ने अपने आधिकारिक एज़्स हैंडल पर इसकी घोषणा करते हुए लिखा, %एक नए युग की शुरुआत! तेजस्वी यादव जी को राष्ट्रीय जनता दल का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह अहम फैसला राजद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के उद्घाटन सत्र में लिया गया। इस मौके पर बिहार के दोनों

पूर्व मुज़्यमंत्री लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी, मंच पर मौजूद थे। लालू यादव ने खुद तेजस्वी को नियुक्ति पत्र सौंपा। हालांकि तेजस्वी को हमेशा से लालू के बाद पार्टी का मुज़्य चेहरा माना जाता रहा है, लेकिन अब इस नियुक्ति के साथ उनके पास औपचारिक रूप से परिवार और पार्टी की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाने की बड़ी जिज़्मेदारी आ गई है।तेजस्वी यादव का करियर काफी दिलचस्प रहा है। राजनीति में आने से पहले वे एक उभरते हुए क्रिकेटर थे और इंडियन प्रीमियर लीग में दिल्ली डेयरडेविल्स टीम का हिस्सा रह चुके हैं। 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में उनके नेतृत्व में राजद सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी और उन्होंने नीतीश कुमार के साथ सरकार में उपमुज़्यमंत्री के रूप में काम भी किया।राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह फैसला पार्टी को एक नया और युवा नेतृत्व देने के लिए लिया गया है। हालांकि, हालिया चुनावों में कड़ी मेहनत के बावजूद राजद तीसरे स्थान पर खिसक गई थी, ज़्योंकि बीजेपी और जेडीयू का गठबंधन अधिक मजबूत साबित हुआ।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

 

# विविध समाचार

 



## क्या भगवान को फूल पानी से धो

**हिंदू धर्म में पूजा-पाठ करने का विशेष महत्व है। ऐसा कहा जाता है कि पूजा के दौरान अपने ईष्टदेव को उनके प्रिय पुष्प अर्पित करने से व्यक्ति की सभी मनोकामना पूरी हो सकती है। वही पुष्प के साथ उन्हें भोग भी चढ़ाया जाता है। इससे सुख-समृद्धि और सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। अब ऐसे में पूजा के दौरान देवी-देवताओं को फूल पानी से धोकर अर्पित करना चाहिए या नही।**

कई लोग पूजा के दौरान भगवान को फूल धोकर अर्पित करते है। ऐसा अशुभ माना जाता है। इसलिए अगर आप अपने आराध्य को पुष्प अर्पित कर रहे है, तो उन्हें सीधे तोड़कर अर्पित करें। इससे शुभ फलों की प्राप्ति हो सकती है।

### धुले पुष्प जलदेव को होते हैं समर्पित

ऐसा कहा जाता है कि अगर आप पुष्प धोकर देवी-देवताओं को अर्पित करते है, तो इससे पहले वह फूल जलदेव को अर्पित हो चुके होते है। इसलिए अर्पित किए फूल को कभी देवी-देवता को अर्पित

## गलती से भी घर में न लगाएं मां लक्ष्मी की ऐसी तस्वीर, आ सकती है आर्थिक तंगी

सनातन धर्म में मां लक्ष्मी को धन की देवी माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक मां लक्ष्मी जिस भी व्यक्ति पर प्रसन्न हो जाती है उसपर अपनी असीम कृपा बरसाती है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति मां लक्ष्मी की विधि विधान से पूजा करता है उसे कभी धन-दौलत की कमी नहीं होती है। इसलिए लोग मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार से उनकी पूजा अर्चना करते है। अक्सर लोग अपने घरो में मां लक्ष्मी की मूर्ति या तस्वीर लगाते है। घर में मां लक्ष्मी की तस्वीर या मूर्ति लगाना शुभ माना जाता है। मगर कई बार लोग जाने-अनजाने में मां लक्ष्मी की कुछ ऐसी तस्वीर लगा लेते है जो भूलकर भी घर में नही लगानी चाहिए। असल में उन तस्वीरों को लगाने से घर में कंगाली आ सकती है। ऐसे में माता लक्ष्मी की तस्वीर लगाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। इसलिए आइए इस लेख में विस्तार से जानते हैं कि मां लक्ष्मी की किन तस्वीरों को लगाने से बचना चाहिए।

न लगाएं उल्लू के साथ मां लक्ष्मी की तस्वीर

मां लक्ष्मी को धन की देवी माना जाता है। हालांकि, उल्लू को उनका वाहन माना जाता है, फिर भी मां लक्ष्मी की उल्लू पर सवार तस्वीर घर में नही लगानी चाहिए। ऐसी मान्यता है कि जब मां लक्ष्मी के पास उल्लू की मूर्ति होती है तो वो उल्लू पर सवार होकर चली जाती है। इसलिए, ऐसी तस्वीर घर में रखने से मां लक्ष्मी की कृपा से वंचित होने का खतरा रहता है।

न लगाएं ऐसी तस्वीर

शास्त्रों के अनुसार, मां लक्ष्मी की खड़ी हुई मुद्रा वाली तस्वीर घर में रखना शुभ नहीं माना जाता। ऐसा माना जाता है कि खड़ी हुई मुद्रा में मां लक्ष्मी का चित्रण उनकी चंचलता को दर्शाता है। जब मां लक्ष्मी खड़ी होती है, तो यह इस बात का संकेत होता है कि वे एक जगह स्थिर नही रहेंगी और जल्द ही घर से चली जाएगी। इसलिए, मां लक्ष्मी की ऐसी तस्वीर घर में रखने से धन और समृद्धि में कमी आ सकती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मां लक्ष्मी की बैठी हुई मुद्रा वाली तस्वीर को ही घर में स्थापित करना शुभ माना जाता है।

ऐसी तस्वीर होती है शुभ

मां लक्ष्मी की कमल के फूल पर विराजमान और सोने के सिक्के बरसाते हुए तस्वीर को शुभ माना जाता है। यह चित्रण देवी लक्ष्मी की धन और समृद्धि प्रदान करने वाली शक्ति का प्रतीक है। ऐसी तस्वीर घर में रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

आशीर्वाद की मुद्रा

घर में मां लक्ष्मी की ऐसी तस्वीर लगाना शुभ होता है, जिसमें वे आशीर्वाद मुद्रा में बैठी हो। ऐसी तस्वीर से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और माता लक्ष्मी हमेशा कृपा बरसाती हैं। यह तस्वीर धन और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।

## घर में लगाएं मां लक्ष्मी के चरण चिह्न

शास्त्रों के हिसाब से मां लक्ष्मी को कई नामों से जाना जाता है। जैसे कि धन लक्ष्मी, वरलक्ष्मी, महालक्ष्मी कहा जाता है। क्योंकि यह एक स्थान पर ज्यादा देर तक नही ठहरती है। मां लक्ष्मी को धन का देवी कहा जाता है। जो व्यक्ति इनकी विधिवत पूजा करता है। उसे वैभव, धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है और साथ ही मां लक्ष्मी की कृपा भी बनी रहती है। अब ऐसे में मां लक्ष्मी के कई प्रतीक चिह्न के बारे में भी बताया गया है। जिसे घर में रखने से व्यक्ति के जीवन में कभी धन-धान्य की कमी नही होती है। तो आइए इस लेख में मां लक्ष्मी के प्रतीक चिह्न के बारे में विस्तार से जानते है।

चरण चिह्न मां लक्ष्मी (मां लक्ष्मी मंत्र)का प्रतीक चिह्न माना जाता है। जब भी घर में कोई भी शुभ कार्य आरंभ होते है। तब रंगोली बनाने के साथ मां लक्ष्मी के चरण चिह्न भी कई तरह से बनाए जाते है। आप मां लक्ष्मी के चरण घर के मुख्य द्वार पर लगाएं। इससे मां लक्ष्मी की कृपा आपके ऊपर हमेशा बनी रहेगी। अगर आप घर में मां लक्ष्मी के चरण चिह्न लगाते है, तो इस बात का ध्यान रखें कि घर की साफ-सफाई अवश्य करें। रोजाना साफ-सफाई करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का वास होता है और परिवार पर कभी किसी प्रकार की कोई बाधा नही आती है।

### घर में शुभ मुहूर्त देखकर श्रीयंत्र की करें स्थापना

घर में शुभ मुहूर्त को देखते हुए श्रीयंत्र की स्थापना करें। श्रीयंत्र मां लक्ष्मी का प्रतीक चिह्न माना जाता है। इसे मां लक्ष्मी का शरीर भी कहा जाता है।

### घर में बनाएं स्वास्तिक का निशान

मां लक्ष्मी को स्वास्तिक का चिह्न भी बेहद पसंद है। यह प्रतीक भगवान गणेश को दर्शाता है। ऐसा कहा जाता है कि मां लक्ष्मी एक जगह पर ज्यादा देर तक नही रहती है। उनकी स्थिरता को बनाए रखने के लिए भगवान गणेश का होना बेहद जरूरी है। क्योंकि पौराणिक मान्यताओं के अनुसार मां लक्ष्मी भगवान गणेश को अपने पुत्र रूप में पाकर बेहद प्रसन्न हुई थी और उन्होंने भगवान गणेश (भगवान गणेश मंत्र) को वरदान दिया था कि मेरी पूजा के साथ तुम्हारी पूजा भी की जाएगी।

### घर मां रखें मां लक्ष्मी का पसंदीदा फूल

मां लक्ष्मी का प्रतीक चिह्न कमल का फूल भी माना जाता है। मां की सवारी भी यही है। इसलिए घर में चांदी के कमल का फूल खरीदकर लाएं और पूजा स्थान पर रख दें। इससे आपके घर कभी पैसों से संबंधित कोई परेशानी नहीं आएगी।

 

# हिंदू धर्म में नारियल के पेड़ को देवताओं का प्रतीक माना गया है

हिंदू धर्म में सभी पेड़-पौधे की पूजा विधिवत रूप से करने के बारे में विस्तार से बताया गया है। पेड़-पौधों में देवी-देवताओं का वास होता है। हिंदू धर्म में नारियल का पेड़ को एक पवित्र वृक्ष माना जाता है। इसका धार्मिक महत्व इतना गहरा है कि इसका उपयोग पूजा-पाठ, अनुष्ठानों और शुभ कार्यों में व्यापक रूप से किया जाता है। नारियल को देवताओं को अर्पित किया जाता है और माना जाता है कि यह शुभता और समृद्धि लाता है। हिंदू धर्म में नारियल के पेड़ को देवताओं का प्रतीक माना जाता है। इसे भगवान शिव, विष्णु और लक्ष्मी सहित कई देवताओं को अर्पित किया जाता है। बता दें, नारियल को शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। इसे नए घर में प्रवेश करते समय, विवाह के समय और अन्य शुभ अवसरों पर तोड़ा जाता है। नारियल को बुरी नजर और नकारात्मक ऊर्जा से बचाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। अब ऐसे में नारियल के पेड़ की पूजा किस विधि से करने से लाभ हो सकता है।

### नारियल के पेड़ की पूजा किस विधि से करें?

- आप नारियल के पेड़ की पूजा के लिए किसी भी शुभ मुहूर्त का चुनाव कर सकते है।
- नारियल के पेड़ के नीचे एक साफ स्थान चुनें और वहां बैठ जाएं।
- एक आसन बिछाकर बैठें और पेड़ की ओर मुख करके बैठ जाएं।
- मुंह में जल लेकर तीन बार कुल्ला करें।
- पेड़ के तने पर जल चढ़ाएं।
- पेड़ के तने पर रोली से तिलक लगाएं।
- पेड़ के चारों ओर चावल अर्पित करें। उसके बाद विधिवत रूप से मंत्रों का उच्चारण करें।
- पेड़ के नीचे फूल और धूप जलाएं।
- आप कोई भी मंत्र जाप कर सकते है, जैसे कि ओम नमो भगवते वासुदेवाय या फिर आप माता लक्ष्मी के मंत्रों का जाप कर सकते हैं। इससे आपको लाभ हो सकता है।
- नारियल के पेड़ की 11 बार परिक्रमा लगाएं। उसके बाद भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के स्तोत्र का भी जाप कर सकते है। इससे आपको लाभ हो सकता है।

### नारियल के पेड़ की पूजा करने का महत्व क्या है?

ऐसा माना जाता है कि नारियल के पेड़ की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी हो सकती है। नारियल के पेड़ की पूजा करने से रोग-दोष से भी छुटकारा मिल जाता है। इतना ही नही, नारियल के पेड़ की पूजा करने से आर्थिक परेशानियों से भी छुटकारा मिल जाता है और व्यक्ति को उत्तम फलों की प्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा नारियल के पेड़ की पूजा करने से सुख-शांति का भी वातावरण बना रहता है।

## इस दिशा में न लगाएं नारियल का पेड़ बढ़ सकता है पारिवारिक क्लेश

**वास्तु शास्त्र के अनुसार, नारियल के पेड़ का संबंध शुक्र ग्रह से है। इसके अलावा, नारियल के पेड़ में भगवान विष्णु, भगवान शिव और ब्रह्मा का वास माना गया है। साथ ही, नारियल के पेड़ को कल्पवृक्ष भी कहते है।**

घर में पेड़-पौधे लगाना बहुत शुभ माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि पेड़ या पौधों को घर में लगाने से सकारात्मकता बनी रहती है। हालांकि पेड़ या पौधों को लगाते समय वास्तु शास्त्र में बताये गए नियमों का ध्यान रखना जरूरी है, नही तो घर पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है। वास्तु शास्त्र में ऐसे कई पेड़ बताए गए है जिन्हें घर के आंगन में उगाना लाभकारी होता है। इन्हीं में से एक है नारियल का पेड़। ज्योतिषाचार्य ने हमें बताया कि नारियल का पेड़ घर में लगाते समय दिशा का ज्ञान होना जरूरी है क्योंकि गलत दिशा में लगाया गया नारियल का पेड़ घर पर संकट ला सकता है। ऐसे में आइये जानते है कि किस दिशा में नही लगाना चाहिए नारियल का पेड़।

### कहां नही लगायें नारियल का पेड़?

वास्तु शास्त्र के अनुसार, नारियल के पेड़ का संबंध शुक्र ग्रह से है। इसके अलावा, नारियल के पेड़ मे भगवान विष्णु, भगवान शिव और ब्रह्मा का वास माना गया है। साथ ही, नारियल के पेड़ को कल्पवृक्ष भी कहते है। साथ ही, नारियल को माता लक्ष्मी का प्रतीक भी माना जाता है। ऐसे मे वास्तु शास्त्र कहता है कि नारियल के पेड़ को कभी भी घर की पूर्व या उत्तर दिशा में नही लगाना चाहिए। हालांकि ज्यादातर पौधों को इन्हीं दो दिशाओं मे लगाना अच्छा मानते है लेकिन नारियल के पेड़ को इन दिशाओं मे लगाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा बढ़ने लगती है। वास्तु शास्त्र कहता है कि नारियल के पेड़ को उत्तर दिशा में लगाने से धन की हानि होती है और घर मे तंगी के हालात पैदा होते है। वहीं, पूर्व दिशा मे लगाने से मान-सम्मान घटने लगता है और घर मे पारिवारिक क्लेश का वातावरण जन्म लेता है। घर की शांति भंग होने लगती है।



## पर्स में नहीं टिक रहा पैसा, आमदनी से ज्यादा खर्च से हैं परेशान, अपनाएं ये आसान वास्तु टिप्स

अकसर लोग इस बात को लेकर परेशान रहते है कि मेहनत करने के बाद भी उनके पास पैसा नहीं टिक पाता। अच्छी खासी कमाई होने के बाद भी खर्च इतने बढ़ जाते है कि बचत करना नामुमकिन हो जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, इसका कारण घर या ऑफिस में कुछ छोटे-छोटे वास्तु दोष होते हैं, जो धन के प्रवाह को रोकते है। समय रहते इन दोषों को दूर करने से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आ सकता है और मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो सकती है। आइए जानते हैं वास्तु के कुछ आसान टिप्स जो इन दोषों को दूर कर आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाते हैं।

कुबेर देवता को मनाने के उपाय

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर की उत्तर दिशा धन और समृद्धि से जुड़ी होती है, जिसके स्वामी धन के देवता कुबेर है। इस क्षेत्र को साफ-सुथरा रखने से आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। उत्तर दिशा में पानी का फव्वारा लगाना बहुत ही शुभ माना जाता है। पानी के फव्वारे से बहता पानी धन के प्रवाह से जुड़ा होता है।

रसोई घर के लिए शुभ दिशा

रसोई घर को सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में से एक माना जाता है। यह घर के स्वास्थ्य और समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वास्तु के अनुसार, रसोई घर के दक्षिण-पूर्व दिशा में होना चाहिए। ध्यान रखें कि घर की उत्तर दिशा में रसोई घर न बनाएं। इससे आपकी आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

किस दिन तेल का दीपक जलाने से शुभ फल मिल सकता है।

### सोमवार के दिन जलाएं सरसों तेल का दीपक

सोमवार भगवान शिव को समर्पित दिन होता है और इस दिन बेलपत्र के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाने का विशेष महत्व है। भगवान शिव जल और सरसों के तेल से प्रसन्न होते हैं। सोमवार को बेलपत्र के पेड़ के नीचे सरसों का तेल जलाने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। इतना ही नहीं, अगर आपके वैवाहिक जीवन में कोई परेशानी आ रही है, तो सरसों तेल का दीपक जलाने से लाभ हो सकता है।

### मंगलवार के दिन जलाएं तिल के तेल का दीपक

मंगलवार को हनुमान जी का दिन माना जाता है। इस दिन तिल के तेल का दीपक जलाने से शुभ परिणाम मिलते हैं। मंगल ग्रह से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए भी तिल के तेल का दीपक जलाने से लाभ हो सकता है। साथ ही अक्षय फलों की भी प्राप्ति होती है। इसलिए बेलपत्र के पेड़ के नीचे तिल के तेल का दीपक जरूर जलाएं।

### गुरुवार के दिन दीपक में हल्दी डालकर जलाएं

गुरुवार का दिन देवगुरु बृहस्पति को समर्पित है और बृहस्पति ज्ञान, धन और वैभव के देवता हैं। ऐसी मान्यता है कि गुरुवार के दिन बेलपत्र के पेड़ के नीचे दीपक में हल्दी डालकर जलाने से गुरुदोष से छुटकारा मिल जाता है और सुख-समृद्धि की भी प्राप्ति होती है। आपको बता दें, यह उपाय आप विशेष रूप से तब करें। जब आपको कार्यक्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है और वैवाहिक जीवन में कलह-क्लेश की स्थिति बन रही है। तब आप सरसों तेल में हल्दी डालकर दीपक जलाएं और भगवान विष्णु के मंत्रों का जाप करें। इससे लाभ हो सकता है।

# कलिंग समाचार

## संपादकीय

**सोमवार 26 जनवरी 2026**

## बंगाल में बढ़ता घमासान

पश्चिम बंगाल की राजनीति में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। लगातार ऐसे प्रकरण घटित हो रहे हैं जिनकी वजह से चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल खड़े हो रहे हैं। दूसरी तरफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का तृणमूल कांग्रेस के खिलाफ सक्रिय होना बता रहा है कि भाजपा यहां चुनाव जीतने के लिए साम, दाम, दंड, भेद सब कुछ अपना रही है। चुनाव आयोग और ईडी दोनों संवैधानिक संस्थाएं हैं और दोनों की साख तभी कायम रहेगी, जब बिना राजनैतिक दबाव के ये कार्य करती दिखाई दें। लेकिन प. बंगाल में ऐसा नहीं हो रहा है। पिछले ह ते ममता बनर्जी की टीएमसी के लिए चुनावी रणनीति बनाने वाली एजेंसी आईपैक के द तर और उसके सहसंस्थापक प्रतीक जैन के घर ईडी ने अचानक दबिश दी। यह छापेमारी कोयला घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस के सिलसिले में दी गई थी और इसका कोई राजनैतिक मकसद नहीं था, ऐसा तर्क ईडी की तरफ से आया। जबकि टीएमसी का सीधा आरोप है कि यह राजनैतिक बदले की कार्रवाई थी और ईडी के जरिए अमित शाह टीएमसी की रणनीति चुराना चाहते हैं। ममता बनर्जी ने जिस तरीके से इस छापेमारी का विरोध किया, इसके खिलाफ रैली निकाली इसकी उ मीद भाजपा को नहीं रही होगी। ईडी ने पहले कलकत्ता हाईकोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट में टीएमसी के खिलाफ याचिका दी है कि उसने काम में बाधा डाली और ममता बनर्जी मौके पर आकर एक फाइल लेकर चली गईं। इधर टीएमसी ने भी हाईकोर्ट में याचिका दी थी। पिछले ह ते इस पर सुनवाई शुरु हुई, लेकिन भीड़ और हंगामे के कारण चल नहीं पाई। फिर बुधवार को फिर से सुनवाई हुई तो इसमें ईडी और भाजपा को बड़ा झटका लगा है। सुनवाई के दौरान ईडी की तरफ से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस वी राजू बार-बार यही अपील करते रहे कि इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका दाखिल है, इसलिए उस पर फैसला आने के बाद ही सुनवाई हो। राजू ने इस बात पर भी आपत्ति जाहिर की कि आई पैक की तरफ से अदालत में कोई मौजूद नहीं था। ईडी ने टीएमसी के आरोप खारिज करते हुए यह भी कहा कि उसने कोई दस्तावेज जब्त नहीं किए। सब कुछ ममता बनर्जी और उनके सहयोगी लेकर चले गए। इस पर टीएमसी की तरफ से पेश वकील मेनका गुरुस्वामी ने साफ कहा कि ईडी के इस बयान को दर्ज कर लिया जाए कि छापेमारी के दौरान कुछ भी जब्त नहीं किया गया। यानी भविष्य में अब ईडी किसी दस्तावेज को छापेमारी में बरामद सबूत के तौर पर पेश करना चाहे तो भी यह संभव नहीं होगा। क्योंकि ईडी ने खुद माना है कि उसने कुछ बरामद नहीं किया है। अदालत में टीएमसी ने आरोप लगाया कि ईडी राजनीतिक पार्टी के साथ मिलकर झूठे इल्जाम गढ़ रही है। फिलहाल ईडी की बार-बार अपील के बाद और टीएमसी की तरफ से दी गई दलीलों के बाद याचिका खारिज कर दी गई हैं, अब सुप्रीम कोर्ट में इस मामले पर क्या फैसला आता है, ये देखना होगा। हाईकोर्ट ने कहा है कि अगर ईडी चाहे तो सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद फिर आ सकती है। यानी जिस उ मीद से ईडी की छापेमारी आईपैक पर करवाई गई थी और उसके बाद अदालत में भी टीएमसी को घेरने की कोशिश हुई थी, उसमें फिलहाल भाजपा को नाकामी हासिल हुई है। ममता बनर्जी अपने विरोधी को घेरने के लिए सड़क पर उतरना और लोगों को अपने साथ करने की राजनीति खूब जानती हैं। ईडी की छापेमारी प्रकरण ने ममता बनर्जी का ये कौशल भाजपा को याद दिला दिया है। अब सुप्रीम कोर्ट से अगर टीएमसी के खिलाफ फैसला आएगा, तो भी ममता बनर्जी उसे सहानुभूति के लिए इस्तेमाल कर लेंगी और अगर पक्ष में फैसला आता है, तब तो भाजपा की बड़ी हार तय है। यानी इस समय ममता बनर्जी के लिए चित भी मेरी और पट भी मेरी वाली स्थिति बन चुकी है। इधर एसआईआर पर भी ऐसे-ऐसे खुलासे हो रहे हैं, जिनसे चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं। अर्मत्य सेन के बाद जादवपुर विवि के कुलपति को चुनाव आयोग ने पेश होने का नोटिस दिया है।

# सीमित युद्ध से भारत को सीखने होंगे कई सबक

**जगदीश रत्तनानी**

आज समझदारी इसी में है कि युद्ध के कोहरे के बीच क्या सही या गलत हुआ, इस बाबत सभी बाहरी दावों और प्रतिदावों को त्याग दिया जाए। समाचार मीडिया एंकरों और स्व-घोषित अति-राष्ट्रवादियों ने कई (ज्यादातर झूठे) दावे कर गड़बड़ कर दी है। सरकार समर्थक मीडिया ने अपने आकाओं की सेवा में काल्पनिक दावों की ऐसी झड़ी लगा दी जिससे सरकार शर्मिंदा हो सकती है और मीडिया ने खुद को बेकार साबित कर दिया है।

पहलगाम में आतंकवादी हत्याओं की निंदा करने और रक्षा बलों को सलाम करने में सारा देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ खड़ा है। इस घटना के कारण पाकिस्तान पर भारत ने पांच दशकों में इतना सघन हमला किया। भारत की इस कार्रवाई के लिए व्यापक समर्थन आतंकवादियों को खोजने और उन्हें न्याय के कटघरे में लाने के राष्ट्रीय संकल्प को दर्शाता है। फिर भी, यह संकल्प आत्म-प्रशंसा के शोर के एक प्रतिध्वनि कक्ष में उतरने का जोखिम उठाता है जो राष्ट्र को उस गहन विश्लेषण से रोक सकता है। इस संघर्ष में हालांकि कुछ भारतीय उद्देश्यों को हासिल कर लिया गया लेकिन इस स्तर पर यह तर्क देना मुश्किल है कि ऑपरेशन सिंदूर एक बड़ी सफलता थी। भले ही ऑपरेशन में सीमित सफलता मिली है लेकिन इससे मिले सबक असीमित हैं। हमारे पास डेटा की एक खदान है जिसमें राजनीतिक ग्राउंड वर्क, राजनयिक जुड़ाव और योजना, रणनीति या परिचालन मुद्दों के विचारों से लेकर उच्च तकनीक वाले सैन्य हार्डवेयर व अत्याधुनिक प्लेटफार्मों के प्रदर्शन पर समृद्ध युद्ध क्षेत्र डेटा तक शामिल हैं।

अगली लड़ाई उन लोगों द्वारा जीती जाएगी जो सैन्य मोर्चे पर इन सीखों पर अच्छी तरह से अमल कर सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा सबक विशेष रूप से राजनीतिक मोर्चे पर होगा जहां युद्ध पर बड़े निर्णय लिए जाते हैं। सीखना हमेशा आसान नहीं होता है। उच्चतम राजनीतिक स्तर पर, यह उस रणनीति को चुनौती देता है जिसने हमें मर्दानगी की बातें और युद्ध के नारे दिए, जिसमें चुनावी रैली भी शामिल है, लेकिन युद्ध के समय अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने के लिए आवश्यक कड़ी मेहनत के कम सबूत मिले. साथ ही, विनम्रता, ईमानदारी और जिज्ञासा की भावना के साथ कठिन सवालों को प्रोत्साहित करने की इच्छा भी होनी चाहिए, जिनमें से कोई भी आत्म-प्रशंसा से मदद नहीं करता है जो गहन जांच को बंद कर देता है।

साथ ही अगर हमें इस मुद्दे पर राष्ट्रीय एकता का पूरा लाभ उठाना है तो विपक्ष पर चुनावी शैली के हमलों के बजाय राजनीतिक दलों को अधिक विश्वास-निर्माण करने वाले कदमों के साथ एक साथ लाना होगा।पहलगाम आतंकी हत्याओं के ठीक दो दिन बाद 24 अप्रैल को बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में जब लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष के नेताओं सहित सभी राजनीतिक नेता मौजूद थे, उसमें प्रधानमंत्री के शामिल न होने के फैसले से विश्वास बहाली में कोई मदद नहीं मिली। वह गलत निर्णय पुरानी ढर्रे की नीतियों के आधार पर लिया गया था। विभिन्न देशों की राजधानियों में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने का सरकार का निर्णय अलग है। यह दृष्टिकोण में बदलाव का संकेत देता है लेकिन कांग्रेस द्वारा नामित नहीं किए गए शशि थरूर के सूची में शामिल होने पर पैदा हुआ विवाद- एक अनावश्यक चुभन- हमें बताता है कि पुरानी आदतें मुश्किल से छूटती हैं। हम उन पाठों पर वापस आ गए जो सीखे नहीं गए हैं। कांग्रेस पहले ही कह चुकी है कि भाजपा गेम खेल रही है। यह एक ऐसे मुद्दे पर कमजोर भरोसे और खराब राजनीतिक संबंधों में उतरता है जो गहरी राजनीतिक एकता की मांग करता है। जानकारियां जिस तरह से अर्थहीन हो गई है उससे कुछ सबक मिलते हैं। आज समझदारी इसी में है कि युद्ध के कोहरे के बीच क्या सही या गलत हुआ, इस बाबत सभी बाहरी दावों और प्रतिदावों को त्याग दिया जाए। समाचार मीडिया एंकरों और स्व-घोषित अति-राष्ट्रवादियों ने कई (ज्यादातर झूठे) दावे कर गड़बड़ कर दी है। सरकार समर्थक मीडिया ने अपने आकाओं की सेवा में काल्पनिक दावों की ऐसी झड़ी लगा दी जिससे सरकार शर्मिंदा हो सकती है और मीडिया ने खुद को बेकार साबित कर दिया है। यह ऐसे दोस्तों का मामला है जो दुश्मनों से भी बदतर काम कर रहे हैं। मीडिया तब सही तरीके से काम करता है जब सभी प्रकार के विचारों को फलने-फूलने की अनुमति दी जाती है। इसका उदाहरण ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म अमेज़ॅन हैं जहां पर ग्राहक समीक्षाओं का समग्र मूल्यांकन कर नकारात्मक और सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रकाशित की जाती है। एकतरफा विचारों से चिह्नित एक पारिस्थितिकी तंत्र सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उस पक्ष के लिए बुरा है जिसे आगे बढ़ाया जा रहा है। ये प्राथमिक सबक हैं जिन्हें फिर से सीखने की आवश्यकता हो सकती है। युद्ध अंतिम उपाय है। यह भारत कह चुका है और इसे वास्तव में प्रधानमंत्री ने अतीत में व्यक्त किया है। 2022 में कारगिल में प्रधानमंत्री को यह कहते हुए उद्धृत किया गया था- भारत ने हमेशा युद्ध को अंतिम उपाय के रूप में देखा है, लेकिन राष्ट्र पर बुरी नजर डालने वाले किसी भी व्यक्ति को करारा जवाब देने की ताकत और रणनीति सशस्त्र बलों के पास है।

**युद्ध अंतिम उपाय है। यह भारत कह चुका है और इसे वास्तव में प्रधानमंत्री ने अतीत में व्यक्त किया है। 2022 में कारगिल में प्रधानमंत्री को यह कहते हुए उद्धृत किया गया था- भारत ने हमेशा युद्ध को अंतिम उपाय के रूप में देखा है, लेकिन राष्ट्र पर बुरी नजर डालने वाले किसी भी व्यक्ति को करारा जवाब देने की ताकत और रणनीति सशस्त्र बलों के पास है। तो भी जब इस अंतिम उपाय का प्रयोग किया जाता है तो ब्रह्मास्त्र अपनी शक्ति खो सकता है। इसका उसी तरह से फिर से उपयोग या संचालन नहीं किया जा सकता।**

तो भी जब इस अंतिम उपाय का प्रयोग किया जाता है तो ब्रह्मास्त्र अपनी शक्ति खो सकता है। इसका उसी तरह से फिर से उपयोग या संचालन नहीं किया जा सकता। कम कार्रवाई को हल्के में लिया जाएगा, मजबूत कार्रवाई से अस्वीकार्य स्तर के जोखिम के साथ तेजी से वृद्धि का जोखिम होगा। डोनाल्ड ट्र प द्वारा पहले जल्दबाजी में घोषित किए गए संघर्ष विराम के मद्देनजर यह भारत के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत या पाकिस्तान ने संघर्ष विराम की घोषणा नहीं की थी। भविष्य में इसका क्या मतलब है इसका पूरी तरह से विश्लेषण करने में समय लगेगा। इस बीच, व्हाट्सएप समूहों पर भेजी जा रही कुछ राजनीतिक प्रतिक्रियाओं से बचना चाहिए- एक ने कहा कि पूर्ण युद्ध केवल तभी संभव है जब भाजपा 400 सीटें जीते। आतंकी हमले और युद्ध ऐसे मुद्दे नहीं हैं जिन पर किसी को वोट और संसद में सीट मांगनी चाहिए। यह खतरनाक और अपमानजनक है- यह प्रतिक्रिया अति उत्साही, सहानुभूति रखने वालों और पार्टी के समर्थकों से आती है। ये लोग उस पार्टी को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं जिसका वे समर्थन करना चाहते हैं। ध्यान दें कि ट्र प ने संघर्ष विराम पर बोलते समय भारत और पाकिस्तान को बराबरी का दर्जा दिया। ट्र प ने एक ही समय अस्तित्व में आए दो देशों के संबंध में स्वीकृत डी-हाइफ़नेशन को मिटा दिया। (डी-हाइफ़नेशन विदेश नीति का एक रूप है जहां एक देश संघर्ष की स्थिति में किसी एक देश को दूसरे पर प्राथमिकता दिए बिना परस्पर विरोधी हितों वाले दो या दो से अधिक देशों के साथ राजनयिक संबंध रखता है)। दोनों देश बहुत अलग रास्तों पर चले हैं- भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में एक आर्थिक महाशक्ति है जबकि पाकिस्तान एक असफल लोकतंत्र के रूप में है जो आर्थिक अनिश्चितता का सामना कर रहा है। यह री-हाइफ़नेशन खेदजनक तस्वीर है क्योंकि यह भारत को बौना बनाता है, भारत को चीन से स्पर्धा करने वाले और शीघ्र ही चीन की बराबरी पर आने वाले देश के रूप में देखे जाने के बजाय संकुचित और सीमित रखता है। अंत में, पहलगाम में हुई हत्याएं सरकार के उन दावों को खोखला साबित करती हैं कि अनुच्छेद 370 को प्रभावी ढंग से खत्म करने के बाद घाटी में शांति बहाल होगी। वास्तव में कई लोगों ने तब बताया था कि ऐसा होगा लेकिन यह स्थिति स्पष्ट रूप से सामने नहीं आई है। अब हम पूछ सकते हैं कि आतंकवादी इतनी आसानी से हमला कैसे करते हैं, सुरक्षा बल कहां थे, खुफिया जानकारी का स्तर क्या है और जब बार-बार ऐसी हत्याएं होती हैं तो जि मेदार लोगों को दोषी क्यों नहीं ठहराया जाता। पहलगाम में निर्दोष लोगों के हत्यारे आज भी खुलेआम घूमते हैं।

# भारत में श्रमिक आंदोलन से गिग वर्कर्स तक

**अरुण कुमार डनायक**

भारतीय रेल में 1974 की ऐतिहासिक हड़ताल जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में हुई। लगभग 17 लाख कर्मचारियों ने वेतन वृद्धि, बोनस, आठ घंटे की ड्यूटी और बेहतर कार्य स्थितियों की मांग की। सरकार की कड़ी दमनात्मक कार्रवाई के बावजूद यह हड़ताल भारतीय राजनीति और श्रमिक इतिहास की एक युगांतकारी घटना बनी और आगे चलकर आपातकाल की पृष्ठभूमि भी तैयार की। हाल के दिनों में गिग वर्कर्स की दो दिवसीय हड़ताल चर्चा में रही। ऐप आधारित डिलीवरी और कैब सेवाओं में लगे ये युवा कठिन परिस्थितियों में असंभव को संभव बनाते हुए शहरी जीवन की गति को थामे रखते हैं।

औपचारिक रूप से उन्हें स्वतंत्र ठेकेदार कहा जाता है, किंतु व्यवहार में वे कंपनियों के एल्गोरिद्मिक नियंत्रण और ग्राहकों के निरंतर दबाव के बीच जीवनयापन करने को विवश हैं। इसके बावजूद आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था में श्रमिकों की वास्तविक स्थिति, उनके संघर्ष के मौलिक अधिकार और हड़ताल की लगातार कमजोर होती क्षमता पर प्रिंट और डिजिटल मीडिया का अपेक्षित ध्यान नहीं गया। हमेशा की तरह इस हड़ताल को भी शीघ्र असफल घोषित कर दिया गया, जबकि ऐसे आंदोलनों का महत्व केवल तात्कालिक परिणामों में नहीं, बल्कि उस सामाजिक चेतावनी में निहित होता है जिसे वे समय-समय पर समाज और राज्य के सामने रखते हैं। भारत में श्रमिक आंदोलन का इतिहास समृद्ध और निर्णायक रहा है। स्वतंत्र भारत के शुरुआती दशकों में सार्वजनिक क्षेत्र, बैंक, रेलवे और बड़े निजी उद्योगों में संगठित आंदोलन न केवल वेतन और सेवा शर्तों में सुधार लाए, बल्कि औद्योगिक संबंधों की दिशा भी निर्धारित की।

23 सितंबर 1954 को ऑल इंडिया बैंक ए प्लॉइज एसोसिएशन के आह्वान पर भारत में पहली अखिल भारतीय बैंक हड़ताल हुई। इसका मु य कारण केंद्र सरकार का लेबर अपीलीय न्यायाधिकरण (शास्त्री अवार्ड) के वेतन निर्णय में हस्तक्षेप करने का प्रयास था, जिससे कर्मचारियों को लगा कि सामूहिक सौदेबाजी और संस्थागत न्याय कमजोर किया जा रहा है।

इस असहमति के चलते तत्कालीन श्रम मंत्री वी. वी. गिरी ने इस्तीफा दे दिया। यह घटना न्यायिक निर्णयों और श्रमिक हितों के बीच संतुलन की आवश्यकता और भारतीय श्रमिक आंदोलन में संस्थागत स्वतंत्रता और सामूहिक संघर्ष की महत्वता को दर्शाती है। इसके बाद 1960 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया हड़ताल ने वेतन, पदोन्नति और सेवाशर्तों में सुधार कर बैंकिंग यूनियनों को निर्णायक शक्ति दी और देसाई अवार्ड को प्रेरित किया।

भारतीय रेल में 1974 की ऐतिहासिक हड़ताल जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में हुई। लगभग 17 लाख कर्मचारियों ने वेतन वृद्धि, बोनस, आठ घंटे की ड्यूटी और बेहतर कार्य स्थितियों की मांग की। सरकार की कड़ी दमनात्मक कार्रवाई के बावजूद यह हड़ताल भारतीय राजनीति और श्रमिक इतिहास की एक युगांतकारी घटना बनी और आगे चलकर आपातकाल की पृष्ठभूमि भी तैयार की। मोरारजी देसाई के प्रधानमंत्रित्व के समय कोयल मजदूरों की हड़ताल सरकारी दमन और राजनीतिक समर्थन के अभाव का शिकार हुई।

निजी क्षेत्र में श्रमिक संघर्ष अपेक्षाकृत असुरक्षित रहे हैं। 2012 में मारुति सुजुकी, मानेसर में यूनियन मान्यता और अनुबंध प्रथा को लेकर संघर्ष हिंसक हो गया, जिसके बाद बर्खास्तगी और कठोर न्यायिक कार्रवाइयों ने निजी उद्योगों में संगठित आंदोलन को हतोत्साहित किया। दत्ता सामंत के नेतृत्व में 1982 की मुंबई और 1977-78 की कानपुर मिल हड़ताल ने दिखाया कि लंबा संघर्ष पूरे उद्योग के पतन और बेरोजगारी का कारण बन सकता है।उदारीकरण के बाद भारत में श्रमिक आंदोलन फीका पड़ गया। 1991 के बाद अर्थव्यवस्था में अस्थायी रोजगार बढ़े, जिससे हड़ताल की सामूहिक शक्ति कमजोर हुई। महंगी शिक्षा और छात्रों का कर्ज भी युवाओं को अस्थायी, जोखिमपूर्ण रोजगार स्वीकार करने पर मजबूर करता है। सरकारी श्रम कानूनों और नीतिगत बदलावों ने निवेश और लचीलेपन को प्राथमिकता दी, जिससे श्रमिक संरक्षण की मूल भावना कमजोर हुई और हड़तालें अप्रभावी होती गईं। श्रम कानूनों में नए बदलावों के बाद श्रमिक आंदोलन पर तीन प्रमुख प्रभाव पड़े। सबसे पहले, ठेका प्रथा, आउटसोर्सिंग और अस्थायी नियुक्तियों से नौकरी की स्थायित्व कम हुई, जिससे यूनियनों की सामूहिक शक्ति कमजोर पड़ी और आंदोलन में भाग लेना जोखिमपूर्ण हुआ। दूसरा, एसमा का व्यापक उपयोग, लंबी नोटिस अवधि और हड़तालों को अवैध ठहराने की प्रवृत्ति ने आन्दोलन के मौलिक अधिकार को सीमित किया।

तीसरा, 2020 की चार श्रम संहिताओं और 2025 के शीतकालीन सत्र में पारित नए कानूनों ने नियोक्ताओं को %हायर एंड फायर% में अधिक लचीलापन दिया, जबकि ट्रेड यूनियनों की मान्यता और सामूहिक सौदेबाजी प्रक्रिया जटिल बना दी। इन बदलावों ने संगठित विरोध की संभावना और पारंपरिक हड़तालों की शक्ति दोनों को कमजोर किया। ज़्यादा जानें मनोरंजन समाचार साक्षात्कार संग्रह ब्रेकिंग न्यूज़ ताज़ा खबरें अपडेट बॉलीवुड समाचार पत्रिका खेल समाचार हिंदी भाषा शिक्षण ताज़ा समाचार प्रमुख समाचार विदेश यात्रा योजनाएँ बैंकिंग क्षेत्र में श्रमिक आंदोलन के क्षीण होने में केवल परिस्थितियां ही नहीं, बल्कि जानबूझ कर अपनाई गई प्रबंधकीय रणनीतियां भी निर्णायक रही हैं।

प्रबंधन ने %पेशेवर% रुख के नाम पर श्रमिक प्रश्न को मानवीय विमर्श से हटाकर मात्र प्रदर्शन, लक्ष्य और उत्पादकता की भाषा में सीमित कर दिया। यूनियन में सक्रिय कर्मचारियों की दूरस्थ तैनाती और पदोन्नति ने उन्हें श्रमिक समुदाय से वैचारिक रूप से अलग किया, जबकि चतुर्थ श्रेणी की भर्तियां बंद कर यूनियनों की संगठनात्मक रीढ़ कमजोर कर दी गई। तकनीकी हस्तक्षेप और स्वचालन ने मानवीय भूमिका सिकोड़ी, जिससे सामूहिकता और सौदेबाजी—दोनों की शक्ति घटती चली गई। साथ ही, बेहतर वेतन और व्यक्तिगत करियर अवसरों ने कर्मचारियों के एक हिस्से को सामूहिक संघर्ष से विमुख किया, जबकि स्थायी नियुक्तियों में गिरावट से यूनियन सदस्यता निरंतर घटती गई। अनुशासनात्मक कार्रवाइयों और भय के माहौल ने हड़ताल में भागीदारी की हिमत भी कम कर दी। परिणामस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र का श्रमिक आंदोलन प्रतिरोध से हटकर समायोजन, मौन और सीमित असहमति की राजनीति में सिमटता चला गया, और बार-बार की हड़तालें उपभोक्ताओं की असुविधा तक सीमित होकर सामाजिक समर्थन खोती गईं।

संसद में वामपंथी दलों का प्रतिनिधित्व घटने से श्रमिक हितों पर बहसें भी सीमित होती चली गईं। हड़तालों और आंदोलन को राजनीतिक संरक्षण और वैचारिक समर्थन मिलना कम हो गया। राजनीतिक दलों ने श्रमिक नेताओं को चुनावी राजनीति से दूर रखा, जिससे ट्रेड यूनियन नेतृत्व और संसदीय प्रक्रिया के बीच कड़ी टूट गई। निवेश-अनुकूलता के नाम पर श्रम सुधारों की बहस औपचारिकता बन गई, और हड़ताल जैसा अहिंसक साधन प्रायः निष्प्रभावी प्रतिरोध रह गया।

स्वतंत्र भारत के संगठित श्रमिक आंदोलन से गिग अर्थव्यवस्था तक की यह यात्रा केवल आर्थिक बदलाव की नहीं, बल्कि श्रमिक शक्ति, न्याय और संरक्षण के सिमटते दायरे की कहानी है। कर्मचारी संघों और नेताओं के उत्पीड़न तथा सरकारी दमन के बावजूद ऐतिहासिक हड़तालों ने वेतन, सेवा शर्तों और सामाजिक सुरक्षा को मजबूती दी, किंतु उदारीकरण, डिजिटल प्लेटफॉर्म और नई श्रम संहिताओं ने सामूहिक प्रतिरोध को कमजोर किया। आज गिग वर्कर्स और असंगठित श्रमिकों की असुरक्षा बताती है कि नीतिगत प्राथमिकताएं श्रम से अधिक बाज़ार के पक्ष में रहीं। जनसमर्थन और राजनीतिक हस्तक्षेप के अभाव में गिग अर्थव्यवस्था की हड़तालें प्रायः निष्प्रभावी हो जाती हैं, क्योंकि बिखरा श्रम और प्लेटफॉर्म आधारित नियंत्रण सामूहिक दबाव को क्षीण करते हैं।

# विविध समाचार

## सीएम मान द्वारा दक्षिण कोरिया के व्यापारिक दिग्गजों से विचार–विमर्श, पैंग्यो टेक्नो वैली की तर्ज पर मोहाली को विकसित करने की घोषणा

चंडीगढ २५/०१ (संवाददाता): पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज दक्षिण कोरिया की अग्रणी कंपनियोंकृ डैवू इंजीनियरिंग एवं निर्माण, जी.एस. इंजीनियरिंग एवं निर्माण, नॉन्गशिम, कोरिया रक्षा उद्योग संघ, सियोल व्यवसाय एजेंसी तथा अन्य अनेक कंपनियोंकृको राज्य में निवेश करने का आमंत्रण दिया। दक्षिण कोरिया दौरे के दौरान मुख्यमंत्री ने डैवू इंजीनियरिंग एवं निर्माण के चेयरमैन जंग वॉन जू से मुलाकात की और नवोन्मेषी ऊर्जा परियोजनाओंकृसमुद्री पवन ऊर्जा संयंत्र, सौर ऊर्जा संयंत्र तथा हरित हाइड्रोजन उत्पादनकृमें सहयोग का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि ऊर्जा संबंधी बुनियादी ढाँचेकृतरलीकृत प्राकृतिक गैस टर्मिनल, पेट्रो–रासायनिक परिसर, उर्वरक संयंत्रकृतथा आधुनिक आवासीय और शहरी विकास परियोजनाओं, स्मार्ट नगर परियोजनाओं, और सड़क, पुल, रेल, बंदरगाह व हवाई अड्डों से संबंधित सिविल ढाँचे में सहयोग की अपार संभावनाएँ हैं। मुख्यमंत्री ने मॉड्यूलर तथा पूर्व–निर्मित ढाँचों की आधुनिक निर्माण तकनीक में तकनीकी आदान–प्रदान की आवश्यकता पर भी बल दिया ताकि तेज और किफायती निर्माण मॉडल विकसित किए जा सकें। डैवू इंजीनियरिंग एवं निर्माण जैसी विश्वविख्यात अवसंरचना कंपनी के साथ रणनीतिक बैठक के दौरान उन्होंने पंजाब की मजबूत औद्योगिक गति, आधुनिक बुनियादी ढाँचों के निर्माण हेतु चल रहे प्रमुख प्रयासों तथा "निवेश पंजाब" प्रणाली के अंतर्गत विशेष संयुक्त निरीक्षण ढाँचे की जानकारी साझा की। उन्होंने वैश्विक उद्योग समूह को पंजाब में व्यापक आधारभूत विकास, आधुनिक निर्माण प्रौद्योगिकियों को अपनाने और प्रस्तावित औद्योगिक नगरों में संभावनाओं की खोज करने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने पर्यावरण–अनुकूलता के वैश्विक मानकों के अनुरूप चलने वाली पहलोंकृईएसजी प्रतिबद्धताओं और हरित हाइड्रोजन कार्यक्रमोंकृमें साझा प्रयासों पर भी जोर दिया। इसके बाद हुई बैठक में मुख्यमंत्री ने जी. एस. इंजीनियरिंग एवं निर्माण के वाइस चेयरमैन यंग हा र्यु से मुलाकघत की। उन्होंने सौर, पवन और हाइड्रोजन जैसी नव्य ऊर्जा परियोजनाओंय सड़क, पुल और स्मार्ट नगर जैसी आधारभूत परियोजनाओंय तथा औद्योगिक परिसरों एवं अभिकल्प –खरीद–निर्माण (ई.पी.सी.) सेवाओं के क्षेत्र में समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने मॉड्यूलर निर्माण तकनीक और हरित हाइड्रोजन तथा स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में विशाल संभावनाओं का उल्लेख किया और राज्य सरकार की ओर से हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। नॉन्गशिम होल्डिंग्स के साथ बैठक में मुख्यमंत्री ने खाद्य एवं प्रसंस्कृत खाद्य उद्योग में संयुक्त कार्य का प्रस्ताव रखा। उन्होंने भारतीय स्वादानुसार नवीन त्वरित–पकवान (इंस्टैंट) नूडल्स के नए संस्करण विकसित करने की आवश्यकता बताई, साथ ही भारत की सुपरमार्केट श्रृंखलाओं और ई–वाणिज्य मंचों पर इनके वितरण के विस्तार पर भी चर्चा की। उन्होंने युवा वर्ग और स्वास्थ्य– सचेत उपभोक्ताओं तक ब्रांड की पहुँच बढ़ाने, स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं के साथ पर्यावरण– हितैषी पैकेजिंग समाधान विकसित करने तथा दीर्घकालिक उपयोग योग्य खाद्य पदार्थ और पौध ा–आधारित विकल्पों पर अनुसंधान में साझेदारी की वकालत की। कोरिया रक्षा उद्योग संघ (के डी आई ए) के वाइस चेयरमैन ली सुंग क्यू से बातचीत में मुख्यमंत्री ने रक्षा निर्माण, रक्षा–तकनीक के आदान–प्रदान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स और मानव–रहित प्रणालियों जैसी उन्नत सैन्य तकनीकों में सहयोग की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने सायबर सुरक्षा तथा कौशल–विकास कार्यक्रमों में साझा प्रयास करके रक्षा निर्माण क्षेत्र में दक्ष जनशक्ति तैयार करने की संभावनाओं पर भी बल दिया। सियोल व्यवसाय एजेंसी के स्टार्टअप प्रभाग के निदेशक जोंग वू किम के साथ मुलाकघत के दौरान मुख्यमंत्री ने पंजाब–आधारित नवोन्मेषी उद्यमों को वैश्विक बाजार तक पहुँचाने हेतु उनके त्वरक (एक्सलेरेशन) और इंक्यूबेशन कार्यक्रमों में सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने स्टार्टअप पारिस्थितिकी–तंत्र, अनुसंध ान–विकास, नवाचार–संस्कृति तथा उत्पाद–प्रमाणीकरण (जैसे "सियोल पुरस्कार") में साझेदारी को समय की आवश्यकता बताया। इसके बाद आयोजित पंजाब में व्यवसाय सुगमता पर गोलमेज बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने दक्षिण कोरिया की अग्रणी वाणिज्यिक, निवेश और उद्योग कंपनियोंकृबी.के.एल., यूलचोन, बडट्री प्रबंधन समूह, एस.के. प्रतिभूति, किम एंड चांग, शिन एंड किम, ली एंड को, डेन्टन्स ली, कोरिया अंतरराष्ट्रीय व्यापार संगठन, कोरिया रोबोट उद्योग संघ, कोरिया व्यापार–निवेश प्रोत्साहन संगठन, कोरिया ऑटो–भाग उद्योग सहकारी, युआन्टा प्रतिभूति, कैपस्टोन परिसंपत्ति प्रबंधन, एन.एच. निवेश एवं प्रतिभूति, और कोरिया औद्योगिक अर्थशास्त्र एवं व्यापार संस्थानकृके प्रतिनिधियों से चर्चा की। मुख्यमंत्री ने पंजाब को सर्वाधिक उपयुक्त निवेश स्थान बताते हुए राज्य सरकार द्वारा की गई प्रमुख सुधार पहलों से इन्हें अवगत कराया और उद्योग विकास को और सहज बनाने हेतु सुझाव भी मांगे। मुख्यमंत्री ने एशिया के सबसे उन्नत नवाचार–केंद्रों में से एक पैंग्यो टेक्नो वैलीकृजिसे "कोरिया की सिलिकॉन वैली" कहा जाता हैकृका अवलोकन भी किया। ग्योंगगीदो व्यवसाय एवं विज्ञान त्वरक के अधिकारियों ने उन्हें पैंग्यो के एकीकृत मॉडल, तकनीकी नवोन्मेष, स्टार्टअप संस्कृति और उच्च–मूल्य अनुसंधान की प्रणाली के बारे में जानकारी दी। उनके अनुसार 1,780 से अधिक कंपनियों, 83,000 पेशेवरों और 25,000 शोधकर्ताओं वाला पैंग्यो विश्व–स्तरीय नवोन्मेषिक क्षेत्र है। मुख्यमंत्री ने पैंग्यो के संरचित त्वरक कार्यक्रमों, विशेष परीक्षण सुविधाओं और प्रदर्शन–आधारित मूल्यांकन पद्धतियों की विशेष प्रशंसा की और कहा कि मोहाली में भी ऐसे मॉडल अपनाकर स्टार्टअप पारिस्थितिकी, अनुसंधान–विकास और कौशल–आधारित रोजगार को बढ़ावा दिया जा सकता है। उन्होंने मोहाली को व्यापक विकास देकर उसे नवाचार–केंद्र के रूप में उभारने की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन विस्तृत संभावनाओं द्वारा पंजाब सरकार ने कोरियाई कंपनियों का स्वागत करने, नवाचार–आधारित औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करने और दीर्घकालिक पारस्परिक साझेदारी मजबूत करने की प्रतिबद्धता और अधिक सुदृढ़ की है। उन्होंने कहा कि पंजाब में निर्माण, प्रौद्योगिकी, खाद्य–प्रसंस्करण, अनुसंधान एवं विकास सहित अनेक क्षेत्रों में सहयोग की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि सियोल रोड–शो "प्रगतिशील पंजाब निवेशक सम्मेलन–2026" से पूर्व यह सम्पूर्ण कार्यक्रम वैश्विक निवेशकों को पंजाब में तीव्र आर्थिक–औद्योगिक अवसरों से अवगत कराने का एक प्रमुख माध्यम है।

## अब प्राइवेट स्कूलों में भी फेल होंगे पांचवीं और आठवीं के छात्र, सरकार ने लागू किया नियम

शिमला२५/०१ (संवाददाता): हिमाचल प्रदेश सरकार ने बड़ा कदम उठाते हुए राज्य के सभी निजी स्कूलों में भी पांचवीं और आठवीं कक्षा में फेल होने की व्यवस्था लागू कर दी है। अब कम अंक आने पर निजी स्कूलों के विद्यार्थी भी परीक्षा में असफल माने जाएंगे। यह प्रावधान केंद्र सरकार द्वारा दिसंबर 2024 में संशोधित किए गए निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 को प्रदेश में लागू करने के बाद संभव हुआ है। नई व्यवस्था के तहत, परीक्षा में असफल होने वाले विद्यार्थियों को आवश्यक अंक प्राप्त करने के लिए एक और अवसर दिया जाएगा। यदि छात्र दूसरी बार भी न्यूनतम अंक हासिल नहीं कर पाता है, तो उसे फेल घोषित कर अगली कक्षा में नहीं भेजा जाएगा। स्कूल शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला अधिकारियों को इस संबंध में निर्देश जारी कर दिए हैं। शीतकालीन अवकाश वाले स्कूलों में यह नियम दिसंबर 2025 की परीक्षाओं से लागू होगा। ग्रीष्मकालीन अवकाश वाले स्कूलों में यह प्रावधान मई 2026 की परीक्षाओं में लागू होगा। सरकारी स्कूलों में यह प्रणाली पिछले वर्ष ही लागू कर दी गई थी। अब निजी स्कूल भी उसी प्रणाली का पालन करेंगे। संशोधित अधिनियम के अनुसार छात्रों को उत्तीर्ण घोषित करने के लिए निम्न दो मानक पूरे करना आवश्यक होंगेकृ समग्र रूप से कम से कम 33ः अंक प्राप्त करना। एसए–1 और एसए–2 के प्रत्येक विषय में अलग–अलग न्यूनतम 33ः अंक लाना अनिवार्य होगा। स्कूल शिक्षा निदेशक आशीष कोहली ने नई व्यवस्था लागू करने के लिए सभी जिलों को विस्तृत दिशा–निर्देश भेज दिए हैं।

## यमुनानगर में मिली महिला की नग्न सिर कटी लाश, शरीर पर सिर्फ अंडरगारमेंट्स, सिर गायब

यमुनानगर २५/०१ (संवाददाता): हरियाणा के यमुनानगर में रविवार दोपहर एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई, जब जगाधरीदृपांवटा नेशनल हाईवे से सटी पॉपलर पौधों की नर्सरी में एक युवती की नग्न अवस्था में सिरकटी लाश बरामद हुई।

शव मिलने की खबर से इलाके में हड़कंप मच गया। नर्सरी संचालक ने खेत में पानी देने के लिए पहुँचते ही शव देखा और तुरंत पुलिस को सूचना दी। जानकारी मिलते ही प्रतापनगर थाना पुलिस मौके पर पहुँची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। पुलिस के मुताबिक, मृतका की उम्र लगभग 25 साल प्रतीत हो रही है। उसके शरीर पर सिर्फ अंडरगारमेंट्स थे, जबकि सिर कहीं नहीं मिला। पुलिस आसपास के पूरे क्षेत्र में युवती के सिर की तलाश कर रही है, लेकिन अब तक कोई महत्वपूर्ण सुराग हाथ नहीं लगा है। सीन ऑफ क्राइम टीम ने भी मौके पर पहुँचकर साक्ष्य जुटाए तथा घटनास्थल की बारीकी से जांच की। वहीं, हत्यारों तक पहुँचने के लिए पुलिस ने डॉग स्क्वॉड की सहायता भी ली है।

पुलिस ने मामले को बेहद गंभीर मानते हुए हत्यारों की तलाश तेज कर दी है और प्रारंभिक जांच में किसी अन्य स्थान पर हत्या कर शव को यहाँ फेंके जाने की आशंका भी जताई जा रही है। ग्रामीणों को कहना है कि जिस तरह से युवती की लाश मिली है, उसके साथ गलत काम किए जाने का भी अंदेशा है। हालांकि, पुलिस का कहना है कि युवती के साथ हत्या से पहले कुछ गलत भी हुआ होगा, अभी इस बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। इसका खुलासा पोस्टमॉर्टम के बाद ही हो पाएगा। पुलिस ने युवती की पहचान कराने के लिए आसपास के थानों में उसके फोटो भेज दिए है।

## लुधियाना में दर्दनाक हादसा : तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकराई, 5 की मौत, मरने वालों में 2 नाबालिग लड़कियां

लुधियाना २५/०१ (संवाददाता): पंजाब के लुधियाना में एक बहुत ही दर्दनाक हादसा हुआ है। जहां एक तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकरा गई। इसमें हादसे में 5 लोगों की मौत हो गई। हादसा रविवार देर रात हुआ। देर रात 1 बजे 2 एंबुलेंस में शवों को सिविल अस्पताल लाया गया। फिलहाल किसी की भी पहचान नहीं हो सकी है। मृतकों में 2 नाबालिग लड़कियां और 3 युवक थे। मरने वाले सभी जगराओं के बताए जा रहे हैं। हालांकि इनके नाम अभी सामने नहीं आए हैं। जानकारी के मुताबिक वरना कार नंबर PB10DH–4619 साउथ सिटी की तरफ से लाडोवाल जा रही थी। ओवर स्पीड के कारण कार बेकाबू होकर लाडोवाल में डिवाइडर से टकराकर सड़क के बीच पलट गई और काफी दूर तक घसीटते चली गई। हादसे में पांचों शव क्षत–विक्षत हो गए। सूचना मिलते ही थाना लाडोवाल से ASI कश्मीर सिंह मौके पर पहुंचे और तुरंत एनएचएआई की एंबुलेंस को सूचना दी। सूचना मिलते ही एंबुलेंस मौके पर पहुंच गई और शवों को कार से बाहर निकालकर एंबुलेंस के जरिए सिविल अस्पताल ले जाया गया।

## वंदे मातरत पर चर्चा : सवाल नीति और नीयत का

भारतीय संसद में शीतकालीन सत्र 2025 के दौरान ष्वंदे मातरमष् की 150वीं वर्षगांठ मनाने के लिए एक विशेष चर्चा आयोजित की गयी। गौर तलब है कि संस्कृत और बांग्ला भाषा के मिश्रण से तैयार किया गया यह गीत पहली बार 1882 में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित उनकी बांग्ला उपन्यास आनंदमठ में प्रकाशित हुआ था। 24 जनवरी 1950 को भारत की संविधान सभा ने इसी गीत अर्थात ष्वन्दे मातरम्ष् को राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया। आज देश में इस गीत को भी राष्ट्रगान अर्थात ष्जन गण मनष् के ही समकक्ष सम्मान प्राप्त है। सभी सरकारी और आधिकारिक कार्यक्रमों में जब इसे गाया या बजाया जाता है, तो सभी लोग इसके सम्मान में खड़े होते हैं। परन्तु हमारे देश में मुस्लिम उलेमा का एक वर्ग ऐसा है जिनका मानना है कि धरती–माँ को इस तरह देवी के रूप में पूजना और उसके सामने सजदा करना इस्लाम विरोधी (शिर्क ) है। और अल्लाह के सिवा किसी को सजदा करना हराम है। इस विचारधारा का प्रतिनिधित्व खासतौर पर देवबंदी अथवा जमाअत–ए–इस्लामी से सम्बंधित अतिवादी वर्ग के लोग ही करते हैं। जबकि अधिकांश मुस्लिम राष्ट्रप्रेम का हिस्सा मानते हुये इसे गाते भी हैं। परन्तु राष्ट्रगान ष्जन गण मनष् का विरोध करने वाले हिंदूवादी विचारधारा से जुड़े लोग खासकर संघ व भाजपा वंदे मातरम को लेकर कांग्रेस पार्टी पर मुस्लिम परस्त होने का इलजाम लगाती रहती है। यही कोशिश गत दिनों संसद में ष्वंदे मातरमष् पर चर्चा के दौरान देखने को भी मिली। खासकर इस चर्चा का ऐसे समय में होना जबकि अगले वर्ष बंगाल में चुनाव भी प्रस्तावित हैं, सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की कोशिशों की तरफ इशारा करता है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने लोकसभा में ष्वंदे मातरमष् पर बहस के दौरान सरकार पर तीखा प्रहार करते हुये यह कहा भी कि राष्ट्रगान पर बहस की कोई जरूरत नहीं क्योंकि यह पहले से ही राष्ट्रगान है। प्रियंका गांधी ने भी यही दावा किया कि यह चर्चा बंगाल चुनावों को ध्यान में रखकर जनता के मुद्दों से ध्यान भटकाने का प्रयास है। उन्होंने ष्वंदे मातरमष् को भारत की आत्मा का हिस्सा बताया, जो गुलामी से जागरण का प्रतीक है और आधुनिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति है। उल्टे प्रियंका गांधी ने संविधान सभा में दो छंद अपनाने पर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विरोध न करने का ही सवाल उठा कर भाजपा को ही घेरने की कोशिश की। राजयसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी सत्ता से सवाल किया कि जब भाजपा के पुरखे श्यामा प्रसाद मुखर्जी, मुस्लिम लीग के साथ बंगाल में सरकार चला रहे थे, तब आपकी देशभक्ति कहां थी? बहरहाल,इसी तरह के मुद्दों को उठाकर कांग्रेस को मुस्लिम परस्त बताने व हमेशा ही कांग्रेस पर तुष्टीकरण की राजनीति करने का आरोप लगाने वाली भाजपा को कम से कम देश को एक बात यह भी बतानी चाहिये कि जिस दारुल उलूम देवबंद व जमाअत–ए–इस्लामी ने वंदे मातरम का विरोध किया था, जिस जमीयत उलेमा–ए–हिंद ने 1937–39 में जारी अपने फतवे में वंदे मातरम को गाना श्हरामश बताया था। उसी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वाली अफगानिस्तान की तालिबान सरकार से तो भारत बेहतर रिश्ते बनाने की तरफ आगे बढ़ रहा है ? गत अक्टूबर माह में ही अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री मौलवी आमिर खान मुत्तकी ने भारत का छह–दिवसीय दौरा किया। इस दौरे के दौरान मुत्तकी ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर से मुलाकात की, जिसमें द्विपक्षीय व्यापार, मानवीय सहायता, शिक्षा और आर्थिक सहयोग पर चर्चा हुई। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अनुमति से संभव यह यात्रा भारत– अफगानिस्तान संबंधों को मजबूत करने का संकेत मानी गई। मुत्तकी ने अपने भारत प्रवास के दौरान केवल राजकीय यात्रा मात्र ही नहीं की बल्कि इस दौरान उन्होंने 11 अक्टूबर 2025 को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में स्थित दारुल उलूम देवबंद अर्थात अपने श्वैचारिक प्रेरणा केंद्रश का भी दौरा किया। यह वही दारुल उलूम देवबंद तो है जिसने वंदे मातरम के एक हिस्से को गाने का विरोध किया था ? मुत्तकी ने अपने भारत दौरे के बीच दारुल उलूम देवबंद पहुंचकर व देवबंदी मसलक से जुड़े दारुल उलूम के उलेमा, छात्रों और अफगान छात्रों से मिकर केवल अपनी अतिवादी वैचारिक प्रतिबद्धता ही नहीं दोहराई बल्कि उन्होंने दिल्ली में ही आयोजित अपनी पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिलाओं को प्रवेश न देकर भी यह साबित कर दिया कि महिलाओं के प्रति इस सोच विचार के लोग कितनी असहिष्णुता का भाव रखते हैं। परन्तु आश्चर्य है कि भाजपा सरकार वंदे मातरम गायन का विरोध करने व इसे हराम बताने वाली विचारधारा व इसके रहनुमाओं को तो गले से लगाती है। इनके स्वागत में लाल कालीन बिछाती है परन्तु कांग्रेस पर वंदे मातरम विरोधी होने का आरोप मढ़ती है ? परन्तु जब कांग्रेस संविधान सभा में इस गीत के दो छंद अपनाने पर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विरोध न करने का सवाल उठाती है तो भाजपा बगलें झाँकने लगती है ? आज देश बेरोजगारी व मंहगाई से बुरी तरह जूझ रहा है। डॉलर के मुकाबले रूपये की कीमत रसातल तक पहुँच गयी है। 2012–13 के मध्य जब डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये की कीमत 60–68 के बीच लुढ़क रही थी। उस समय नरेंद्र मोदी ने यूपीए सरकार पर कड़ा प्रहार करते हुये कहा था कि ष्हमारी मुद्रा मृत्युशैया पर है, यह टर्मिनल स्टेज पर है और इसे तुरंत डॉक्टर की जरूरत हैष्। उसी समय मोदी ने जोर देकर यह भी कहा था कि रुपये की गिरावट से प्रधानमंत्री की इज्जत गिरती है, क्योंकि रुपया केवल कागज का टुकड़ा नहीं, बल्कि देश की प्रतिष्ठा से जुड़ा होता है। उस समय मोदी ने इसे तत्कालीन यू पी ए सरकार की आर्थिक नाकामी करार दिया था। परन्तु आज तो 1 डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा 90 के करीब पहुँच चुकी है। आज देश की संसद में इसपर चर्चा क्यों नहीं होती ? दरअसल मोदी सरकार ने अपनी पूरी ताकत देश का साम्प्रदायिक आधार पर ध्रुवीकरण करने में झोंक रखी है। खासकर चुनावों के समय ऐसी कोशिशों में और भी तेजी आ जाती है। बड़ा आश्चर्य है कि स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर राष्ट्रगान तक का विरोध करने वाले,गांधी की हत्या पर जश्न मनाने व मिठाइयां बांटने वाले,भारतीय संविधान को न पचा पाने वाले लोग आज सत्ता में आने के बाद बड़े ही शातिर तरीके से स्वयं को महान देशभक्त व धर्म के श्अभिरक्षक श बनने की कोशिश कर रहे हैं।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

# ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार | राउरकेला, सोमवार 26 जनवरी 2026 | पृष्ठ-6


## केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रधान ने ओडिशा पहली बोइंग सुकन्या लैब का उद्घाटन किया

संबलपुर २५/०१ (संवाददाता): केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने संबलपुर जिले में ओडिशा की पहली बोइंग सुकन्या STEM लैब का उद्घाटन किया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि बोइंग सुकन्या स्त्रश्वरू लैब युवाओं, खासकर देश की बेटियों को एविएशन और एयरोस्पेस सेक्टर में भविष्य के अवसरों के लिए तैयार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मौके पर प्रधान ने ऐसी तीन लैब का उद्घाटन किया। ष्टस्क्क जिला स्कूल में उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए प्रधान ने कहा, भारत में अभी लगभग 2,500 सिविल सेक्टर के विमान हैं और अगले दशक में यह संज्या बढ़कर 15,000 होने की उज़्मीद है। इस विस्तार के लिए पायलट, इंजीनियर, टेज़्नीशियन और मेंटेनेंस प्रोफेशनल्स की एक नई पीढ़ी की ज़रूरत होगी।

मशीन लर्निंग लैब संबलपुर यूनिवर्सिटी में बनेगी इन लैब से सालाना 3,000 से ज़्यादा छात्रों को फायदा होने की उज़्मीद है। प्रधान ने संबलपुर के ष्टस्क्क जिला स्कूल में स्त्रश्वरू लैब का फिजिकली उद्घाटन किया, जबकि रायराखोल और कुचिंडा की लैब का उद्घाटन उसी दिन वर्चुअल मोड से किया गया। प्रधान ने इस बात पर ज़ोर दिया कि एयरोस्पेस शिक्षा, एयरोमॉडलिंग और स्त्रश्वरू लर्निंग से छात्रों में वैज्ञानिक सोच, क्रिटिकल थिंकिंग और इनोवेशन विकसित करने में मदद मिलेगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा, यह पहल एविएशन में करियर बनाने की इच्छुक प्रतिभाशाली लड़कियों के लिए विज़ीय बाधाओं को दूर करने में भी मदद करेगी, जिसमें पायलट ट्रेनिंग भी शामिल है।

STEM लैब में साइंस, टेज़्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथमेटिज़्स, एविएशन और एयरोमॉडलिंग पर फोकस करने वाली एज़्सपेरिमेंटल लर्निंग किट, डिजिटल टूल और हैंड्स-ऑन मॉड्यूल हैं। कक्षा ङ्कढ्ढ से ङ्क तक के छात्र एज़्टिविटी-बेस्ड लर्निंग, वर्कशॉप और एज़्सप्लोरेटरी सेशन में हिस्सा लेंगे, साथ ही उन्हें क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्त्रश्वरू और एयरोमॉडलिंग प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रधान ने छात्रों में कॉन्सेप्ट की ज़्लैरिटी को मज़्बूत करने के लिए फाउंडेशनल लेवल पर मातृभाषा में शिक्षा देने के महत्व पर ज़ोर दिया। बोइंग इंडिया और दक्षिण एशिया के प्रेसिडेंट सलिल गुप्ते ने कहा कि यह कार्यक्रम इस विश्वास पर आधारित है कि शिक्षा तक समान पहुंच इनोवेशन को बढ़ावा देती है।

## एमसीएल हिराकुंड अंतरराष्ट्रीय हाफ मैराथन 15 फरवरी को

संबलपुर २५/०१ (संवाददाता): हिराकुंड अंतरराष्ट्रीय हाफ मैराथन 2026 का आयोजन महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (एमसीएल) एवं संबलपुर जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वाधान में 15 फरवरी 2026 को किया जाएगा। श्री धर्मेंद्र प्रधान, माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने एमसीएल मुज़्यालय में आयोजित विशेष कार्यक्रम इसकी औपचारिक घोषणा की। इस अवसर पर कार्यक्रम का आधिकारिक लोगो एवं टी-शर्ट का अनावरण भी किया गया।यह मैराथन एशिया के सबसे बड़े बांध—हिराकुंड बांध—पर आयोजित की जाएगी। इस मैराथन में देश एवं विदेश से पेशेवर तथा शौकिया धावकों के बड़ी संज्या में भाग लेने की संभावना है। इस अवसर पर श्री सूर्यवंशी सूरज, माननीय उच्च शिक्षा, खेल एवं युवा सेवा मंत्री, ओडिशा सरकार; आईजी (उज़री प्रभाग); जिलाधिकारी, संबलपुर; पुलिस अधीक्षक, संबलपुर; अन्य राज्य सरकार के अधिकारी, एमसीएल के अधिकारीगण तथा बड़ी संज्या में विद्यालयों के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

## बलराम साहू की गुमशुदगी में गांजा कारोबार और गर्लफ्रेंड पर शक

भुवनेश्वर २५/०१ (संवाददाता): बिजनेसमैन बलराम साहू के रहस्यमय तरीके से गायब होने के सात साल बाद, ओडिशा पुलिस ने केस को फिर से खोल दिया है और राज्य की सबसे रहस्यमय अनसुलझी घटनाओं में से एक के पीछे की सच्चाई का पता लगाने के लिए जांच तेज कर दी है। नई जांच से 2019 के गुमशुदगी के मामले पर फिर से ध्यान गया है, जिससे मामले में कोई बड़ी सफलता मिलने की उज़्मीद जगी है। गर्लफ्रेंड को पुलिस रिमांड पर लिया गया नई जांच के तहत, बलराम की गर्लफ्रेंड रश्मिता स्वैन को झारपाड़ा जेल से पुलिस रिमांड पर लिया गया है और लगातार दूसरे दिन उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि पूछताछ के दौरान कई अहम सुराग मिले हैं। जांचकर्ताओं को शक है कि बलराम का अपहरण किया गया था और रश्मिता इस घटना में सीधे या परोक्ष रूप से शामिल हो सकती है।

पुलिस को यह भी संकेत मिले हैं कि यह मामला अवैध नशीले पदार्थों की डीलिंग से जुड़ा हो सकता है। जांचकर्ताओं के अनुसार, बलराम और रश्मिता दोनों कथित तौर पर गांजा तस्करी से जुड़े थे, और ड्रग्स व्यापार से जुड़े विवाद के कारण बिजनेसमैन गायब हो गया होगा। पुलिस ने जांच के कई पहलुओं की पुष्टि की भुवनेश्वर के डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस जगमोहन मीना ने कहा कि मामले की गहन जांच की जा रही है। यह एक लंबे समय से लंबित मामला है जिसे अब समीक्षा के लिए उठाया गया है। परिवार के सदस्यों और गवाहों से पूछताछ की गई है। संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है, गिरज़्तार किया गया है और दो दिन की रिमांड पर लिया गया है। जांच अभी भी जारी है, उन्होंने कहा।

कई अहम सवालों के जवाब अभी भी नहीं मिले पुलिस के महत्वपूर्ण सुराग मिलने के दावों के बावजूद, कई अहम सवाल अभी भी अनसुलझे हैं। जांचकर्ताओं को अभी यह पता लगाना है कि कथित अपहरण के बाद बलराम के साथ ज़्या हुआ, उसे कहाँ ले जाया गया, और ज़्या वह अभी भी जीवित है। एक बड़े नेटवर्क के शामिल होने की संभावना की भी जांच की जा रही है। बलराम साहू 2019 में रहस्यमय परिस्थितियों में गायब हो गए थे, और तब से उनके परिवार को उनके ठिकाने के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। हालांकि पिछले कुछ सालों में कई जांचें की गईं, लेकिन मामला ठंडा पड़ गया था, जब तक कि हाल के घटनाक्रमों ने जवाब मिलने की उज़्मीद फिर से जगा दी। और खुलासे की उज़्मीद रश्मिता स्वैन को लगभग 15 दिन पहले गंजाम जिले से गिरज़्तार किया गया था, जिसके बाद पुलिस ने मामले को विस्तार से फिर से खोलने का फैसला किया। अधिकारियों ने बताया कि जांच कई मोर्चों पर जारी है, और जांच आगे बढ़ने के साथ आने वाले दिनों में और खुलासे होने की उज़्मीद है।

## यूनेस्को की संभावित सूची में ओडिशा के तीन बौद्ध स्थल

भुवनेश्वर २५/०१ (संवाददाता): ओडिशा सरकार ने शनिवार को राज्य के तीन प्रमुख बौद्ध स्थलों रत्नागिरी, ललितगिरि और उदयगिरि को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल की मान्यता देने पर विचार के लिए भारत की संभावित सूची में शामिल किए जाने की सराहना की। ओडिशा की उप मुज़्यमंत्री प्रभाती परिदा, जो पर्यटन विभाग की मंत्री भी हैं, ने कहा कि इन तीनों बौद्ध स्थलों ने प्राचीन ज्ञान से वैश्विक पहचान तक का सफर तय किया है। परिदा ने ङ्क पर एक पोस्ट में कहा, रत्नागिरी, उदयगिरि और ललितगिरि यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल। उन्होंने कहा कि राज्य के इन तीन बौद्ध स्थलों का यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल होना विरासत, संरक्षण और स्थायी पर्यटन के लिए एक बड़ी उपलज़्धि है। ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, ओडिशा का हीरा त्रिकोण; रत्नागिरी, ललितगिरि और उदयगिरि को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल की मान्यता देने पर विचार के लिए भारत की संभावित सूची में शामिल किया गया है। यह हमारे राज्य, हमारी संस्कृति और विरासत के लिए गर्व की बात है।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, यूनेस्को में भारत के राजदूत और स्थायी प्रतिनिधि विशाल वी शर्मा को लिखे एक पत्र में, यूनेस्को के विश्व धरोहर केंद्र के निदेशक लाज़ारे एलौंडौ असोमो ने पुष्टि की कि भारत ने 22 दिसंबर, 2025 को दस्तावेज़ जमा किए थे। पत्र में कहा गया है, चूंकि प्रस्ताव परिचालन दिशानिर्देशों को पूरा करता था, इसलिए यूनेस्को ने इन सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थलों को शामिल करने के लिए भारत की संभावित सूची को अपडेट किया।

ओडिशा के इतिहास के अनुसार, इन स्थलों को बौद्ध सर्किट के हीरा त्रिकोण के रूप में पहचाना जाता है, माना जाता है कि ये बौद्ध धर्म के तीनों स्कूलों- हीनयान, महायान और वज्रयान के प्रसार के गवाह रहे हैं। सूत्रों ने बताया कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (स्ढ्ढ), जो भारत की ओर से विश्व धरोहर सज़्मेलन के लिए नोडल एजेंसी है, ने संबंधित दस्तावेज़ संकलित किए और विशाल वी शर्मा के माध्यम से यूनेस्को के विश्व धरोहर केंद्र को नामांकन प्रस्तुत किया। ये तीनों स्थल महायान और वज्रयान परंपराओं की समृद्ध विरासत को दर्शाते हैं और इनमें मठ, स्तूप, मूर्तियां और शिलालेख हैं जो पूरे एशिया में बौद्ध धर्म के प्रसार में ओडिशा की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हैं। इतिहासकार अनिल धीर ने कहा कि ओडिशा के अविभाजित कटक जिले में स्थित रत्नागिरी, उदयगिरी और ललितगिरी को टेंटेटिव लिस्ट में शामिल करने से इस क्षेत्र में हेरिटेज टूरिज़्म, रिसर्च और संरक्षण के प्रयासों में भी मदद मिलेगी।

## बणई अनुमंडल में पर्यटन स्थलों की उपेक्षा

राउरकेला २५/०१ (संवाददाता):प्राकृतिक मनोरम स्थलों से परिपूर्ण बणई अनुमंडल में पर्यटन की उपेक्षा की जा रही है। पर्यटन विभाग व वन विभाग की ओर से खंडाधार जलप्रपातए देवधरए तथा कोइड़ा में प्राकृतिक पर्यटन स्थल के विकास के लिए काम हुआ है पर अब भी गुरुंडिया के बादल गिरि जलप्रपातए ब्राहमणी नदी में सिचाई परियोजनाए सरसरा में सिचाई परियोजनाए कोइड़ा में कुराड़ी नाले में सिचाई परियोजना का काम कर आसपास के क्षेत्र में पर्यटन स्थल बनाए जा सकते हैं। गुरुंडियाए लहुणीपाड़ाए कोइड़ व बणई ज़्लाक के जल प्रपात हैं जिनका विकास पर्यटन स्थल के रूप में किया जा सकता है। सुंदरगढ़ जिले में बणई अनुमंडल में ही ओडिशा का सबसे ऊंचा जलप्रपात खंडाधार स्थित है। राज्य सरकार की ओर से यहां पर्यटको को आकृष्ट करने के लिए इको टूरिज़्म में शामिल किया गया है तथा इस क्षेत्र में वन विभाग की ओर से विकास का काम किया जा रहा है।

टेनसा में पहाड़ी की ऊंचाई पर गेस्ट हाउस का निर्माण किया गया है। इसका निर्माण कार्य पूरा हो चुका है एवं एक महीने के अंदर आम लोगों के लिए इसे खोल दिया जायेगा। ब्राहमणी नदी पर दार्जिंग घाटए वीरतोला घाट के साथ रुकड़ा सिचाई परियोजनाए सरसरा में बड़जोर सिचाई परियोजनाए कोइड़ा ज़्लाक में कुराली सिचाई परियोजना के आसपास पर्यटन विकास के लिए पर्याप्त संभावना है। इसके अलावा बणईए गुरुंडियाए लहुणीपाड़ा व कोइड़ा ज़्लॉक क्षत्र में घागए मिरिग लेउटुणीए बादलगिरिए घोराघरए खंभेश्वरीए सूखानालाए मानसमुंडी आदि जल प्रपात लोगों को आकृष्ट कर रहे हैं। जहां पर्यटन विकास का काम नहीं हो पा रहा है। इसी तरह बणई में तीर्थ घाटए प्राचीन बाबा बणेश्वर मंदिरए राजप्रसादए मा कुमारी मंदिरए जगन्नाथ मंदिरए बीजू पार्कए सानजोलो कलईपोष दर्शनीय स्थल पर्यटकों को आकृष्क नहीं कर पा रहे हैं।

## राउरकेला हाफ मैराथन का पहला संस्करण शानदार सफलता के साथ संपन्न

राउरकेला २५/०१ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) द्वारा आयोजित राउरकेला हाफ मैराथन का पहला संस्करण शानदार सफलता के साथ संपन्न हुआ। एआईएमएस (एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल मैराथन एंड डिस्टेंस रेसेस)द्वारा मान्यता प्राप्त इस मेगा खेल आयोजन में अन्य राज्यों के 1251 राष्ट्रीय स्तर के धावकों सहित 5000 से अधिक धावकों ने भाग लिया, जिसने इस्पात नगरी राउरकेला को वैश्विक दौड़ मानचित्र पर एक एक नई पहचान दिलाई। भारत सरकार के माननीय केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री श्री जुअल ओराम, राउरकेला के माननीय विधायक, श्री सरदा प्रसाद नायक, आरएसपी के निदेशक प्रभारी, श्री आलोक वर्मा, आरएसपी के पूर्व निदेशक प्रभारी, श्री अतनु भौमिक, पश्चिमी रेंज के उप महानिरीक्षक (आईपीएस), श्री बृजेश राय, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के उप महानिरीक्षक श्री रतन कुमार, राउरकेला के पुलिस अधीक्षक (आईपीएस), श्री नितेश वधवानी, राउरकेला की अतिरिक्त जिलापाल, सुश्री धीना दस्तीगर (आईएएस), बीपीयूटी के कुलपति, प्रोफेसर अमिया कुमार रथ, एनआईटी की निदेशक, प्रोफेसर उमा महेश्वर राव,आरएसपी के सभी कार्यपालक निदेशक, दीपिका महिला संघति के शासी निकाय के सदस्य,ट्रेड यूनियनों और कार्यकारी संघ के प्रतिनिधि और सुप्रसिद्ध खेल व्यक्तित्व धावन प्रारंभ (ज़्लैग ऑफ) समारोह में उपस्थित थे। इस अवसर पर अर्जुन पुरस्कार से सज़्मानित सुनील पात्र एवं रोमन घोष, अंतरराष्ट्रीय मैराथन विजेता, डॉ. सुनीता गोदारा, अर्जुन पुरस्कार विजेता रचिता मिस्त्री तथा राउरकेला की शान, हॉकी ओलंपियन बिरेंद्र लकड़ा जैसे दिग्गज खेल सितारों की गरिमामयी उपस्थिति भी देखि गई।

इस भव्य आयोजन की शुरुआत 21.1 किलोमीटर पुरुष वर्ग की दौड़ को हरी झंडी दिखाकर की गई। इसके बाद विभिन्न आयु वर्गों में पुरुषों और महिलाओं के लिए 21.1 किलोमीटर, 10 किलोमीटर और 5 किलोमीटर की दौड़ें आयोजित की गई, साथ ही दिव्यांग प्रतिभागियों के लिए 2 किलोमीटर दौड़ की भी का क्रमवार शुभारंभ की गई । सुव्यवस्थित और सुनियोजित कार्यक्रम के चलते सभी स्पर्धाएँ सुचारू रूप से संपन्न हुईं।

राउरकेला की रिंग रोड ने मैराथन के लिए एक खूबसूरत मनोहारी पृष्ठभूमि प्रस्तुत की, जहाँ धावक हरियाली से आच्छादित मार्गों और डिवाइडर पर सजी बोगनवेलिया की रंग-बिरंगी छटाओं के बीच दौड़ते नजर आए। इस प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर मार्ग ने प्रतिभागियों को न केवल एक प्रेरणादायक और ताजगी भरा अनुभव प्रदान किया, बल्कि शहरी विकास और प्रकृति के सुंदर समन्वय को भी दर्शाया, जिसकी धावकों और दर्शकों दोनों ने मुक्त कंठ से सराहना की।

मैराथन मार्ग पर मनोरंजन केंद्र स्थापित किए गए थे, जहाँ चीयरलीडर्स और बच्चों ने धावकों का उत्साहवर्धन किया, जिससे पूरे मार्ग में जोश और प्रेरणा का संचार हुआ। प्रतिभागियों की सुविधा, सुरक्षा और सर्वोज़म प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए मार्ग पर उचित व्यवस्था की गई थी, जिसमें पानी पीने के लिए उपयुक्त स्थान और चिकित्सा सहायता केंद्र शामिल थे।श्री सरदा प्रसाद नायक और श्री आलोक वर्मा ने आरएसपी के कार्यपालक निदेशकों के साथ मिलकर विभिन्न श्रेणियों के विजेताओं को ट्राफियाँ और नकद पुरस्कार प्रदान किए। मैराथन की विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं को कुल 7,70,800/- रुपये की पुरस्कार राशि दी गई। इस अवसर पर बोलते हुए, निदेशक प्रभारी ने इस आयोजन को राउरकेला के लिए एक ऐतिहासिक उपलज़्धि बतायी । क्षेत्र से खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देते हुए, उन्होंने बताया कि मैराथन में दूरदराज के क्षेत्रों के प्रतिभागियों के लिए सबसे अधिक पुरस्कार राशि रखी गई थी। यह उल्लेखनीय है कि सीएसआर गांवों के युवाओं की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, उनमें से कुछ को पिछली रात से ही स्टेडियम में रखा गया था और उन्हें सभी सुविधाएं प्रदान की गई थीं, जबकि बाकी को बसों से इस आयोजन के लिए लाया गया था।

दौड़ से पूर्व डॉ. गोदारा और सुश्री अनुप्रिया सिन्हा के मार्गदर्शन में जुज़्बा सत्र संचालित किया गया जिसमें जुज़्बा की जोशीली धुनों ने प्रतिभागियों को जोशीला बना दिया । आरएसपी के आधिकारिक संगीत बैंड %नीनाद% की लाइव प्रस्तुति ने उत्सवपूर्ण माहौल को और भी जीवंत बना दिया, जिससे पूरा आयोजन स्थल उत्सवमय बन गया।